सकारात्मक स्पंदन पुष्टि - पुष्टिमार्ग - १ (प्रथम)

Vibrant Pushti

" जय श्री कृष्ण "

श्री यमुना महाराणी जी प्राकट्य कहाँ से हुआ?

मुरारी पद पंकज

या

सूर्य नारायण के सूता रुप से हुआ?

मान्यता से अधिक सत्यता है और सत्य से ही विश्वास और पवित्रता की जागृतता होती है।

"Vibrant Pushti"
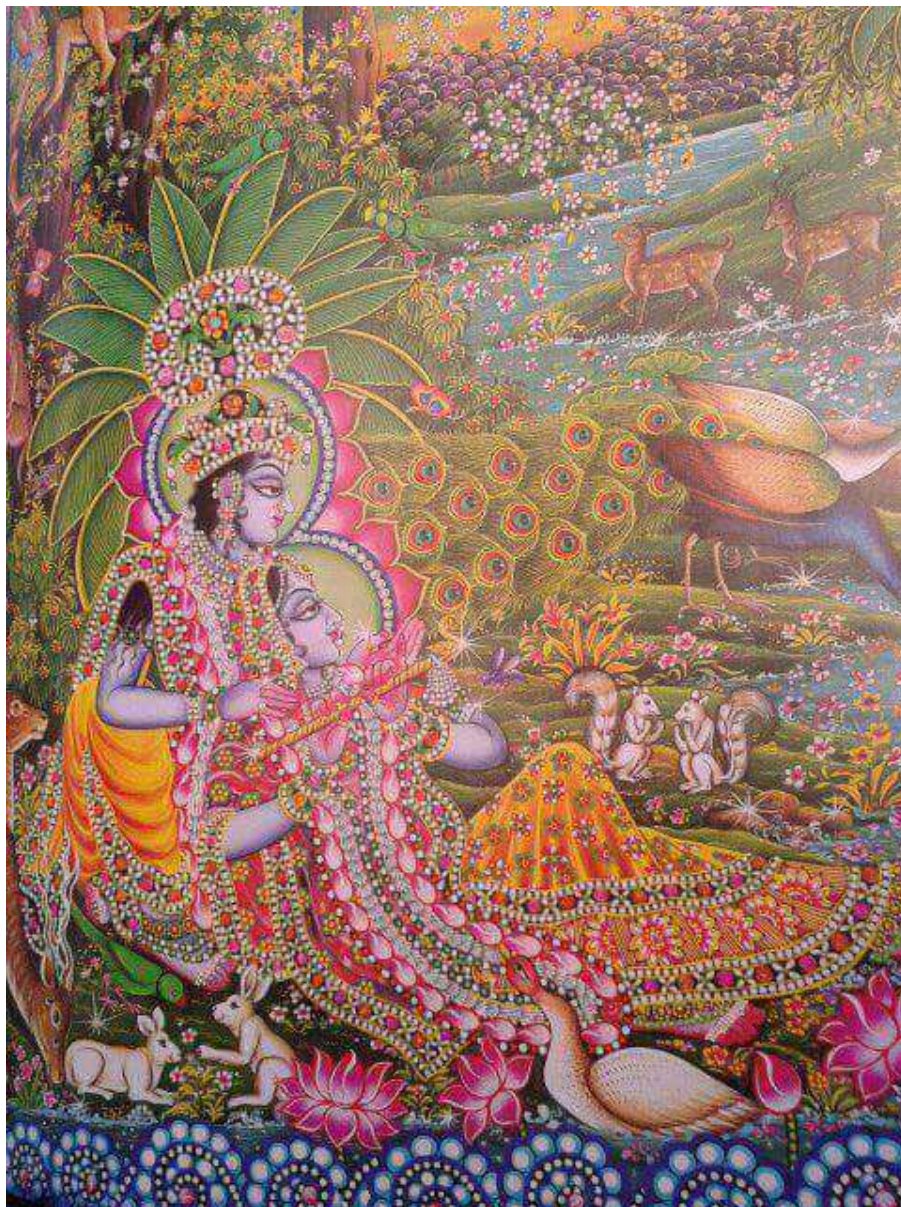
पधारो श्री यमुना हमारे द्वारे

हमारे द्वारे हमारे द्वारे

पधारो श्री यमुना हमारे द्वारे

पुष्टि प्रीत की सांझी रंगाई

पुष्टि पुष्प की माला सजाई

मेरे आँगन चतुर्थ प्रिया

मेरे आँगन रे

पधारो श्री यमुना हमारे द्वारे

हमारे द्वारे हमारे द्वारे

पुष्टि प्रीत की धून बजाई

पुष्टि कीर्तन की धूम मचाई

मेरे आँगन मुकुंद रति वर्धिनि

मेरे आँगन रे

पधारो श्री यमुना हमारे द्वारे

हमारे द्वारे हमारे द्वारे

पुष्टि प्रीत रीत की सेवा प्रकटाई

पुष्टि प्रीत मति की शरण जगाई

मेरे आँगन श्यामा सखी

मेरे आँगन रे

पधारो श्री यमुना हमारे द्वारे

हमारे द्वारे हमारे द्वारे

पुष्टि सिद्धांत से कलिंद रचाया

पुष्टि सुबोधनी से जीवन धराया

मेरे आँगन कालिंदीजी

मेरे आँगन रे

पधारो श्री यमुना हमारे द्वारे

हमारे द्वारे हमारे द्वारे

हे मेरे प्रियतम सखी!

पधारो! पधारो! पधारो!

"Vibrant Pushti"
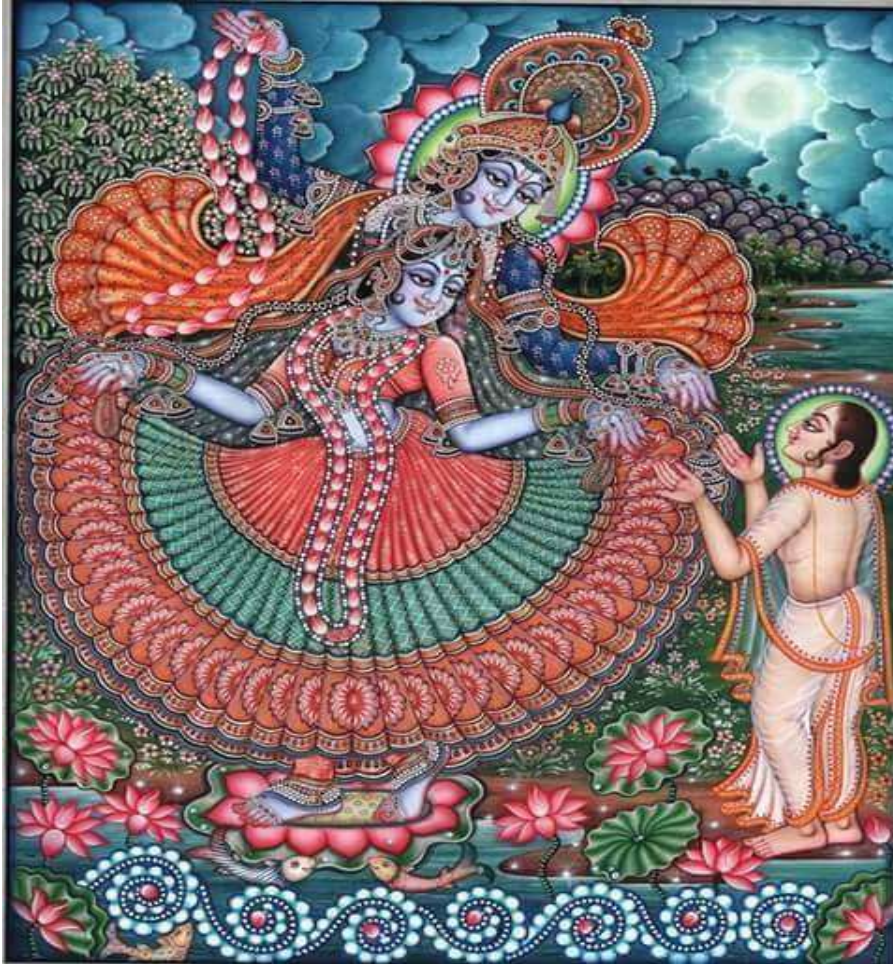
कभी पहूँचना नाथ के द्वार

कभी परिक्रमा गिरिराज मुखार

कभी अभिषेकना दूग्ध यमुना किनार

कभी छूना व्रजरज गौ गाँव

कभी दर्शना नैन द्वारका नाथ

कभी पद पद यात्रा जगन्नाथ

यही है जीवन संवार

होगा तन मन शृंगार

पाये संस्कृत संस्कार

होगा जन्म सागर पार

"Vibrant Pushti"

"यज्ञरुपो हरि: पूर्व कांडे ब्रह्मतनु: परे ।

अवतारी हरि: कृष्ण: श्रीभागवत ईर्यते ।।"

अदभुत! अदभुत! अति अदभुत!

परब्रह्म मूल स्वरुप जो यज्ञरुपो है।

यह परम तत्व ने खुद ने खुद का अपनी क्रिया या ने यज्ञ के माध्यम से साकार प्रतिपाद किया जिससे जो ज्ञान प्रकट हुआ, जो ज्ञान प्रज्वलित हुआ, यह ज्ञान उभय से सर्वेषामर्थ हुआ। यह क्रिया से पूर्व और उत्तर कांड या ने आत्म तत्व का पूर्व और उत्तर रुप में जो तनुनवत्व का जो प्रमाण प्रकट हुआ, यह प्रमाण ही अवतारी श्री कृष्ण की विशिष्टता निरुपण करते है। यही ही वेद और श्री मद् भागवत लीला है। जो जीव तत्व से परम तत्व की तनुनवत्व परिवर्तनता की शिक्षा प्रदान करता है।

अदभुत! अदभुत! अति अदभुत!

"Vibrant Pushti"

सेवा करते है।

क्या है यह जुल्फें?

क्या है यह कपोल?

क्या है यह भंवर?

कया है यह पलक?

क्या है यह नैन?

क्या है यह नासिका?

क्या है यह होठ?

क्या है यह अधर?

क्या है यह चिबुक?

क्या है यह कर्ण?

क्या है यह मुखडा?

कभी सोचा है?

खुद समझलो,

खुद सोच लो,

खुद स्पर्श पा लो,

खुद आनंद लूटलो,

खुद अपने आप को डूबो दो।

असर होगी,

स्पंदन होगा,

होगा लूटाने तन मन धन।

"रीति है सेवा की प्रीत न्योछावर से

यही है पवित्र विशुद्धता खुद में जगाने की"

"Vibrant Pushti"

" श्याम सुंदर श्री यमुने महाराणी की जय "

"निर्दोष पूर्ण गुण विग्रह आत्मतंत्रो निश्चेतनात्मक शरीर गुणैश्च हीन:।

आनंद मात्र कर पाद मुख उदर आदि: सर्वत्र च त्रिविधभेद विसर्जित आत्मा।।"

श्री वल्लभ" कितनी सूक्ष्मता से श्री प्रभु के दर्शन कैसे करना होता है और दर्शन करके हममें क्या प्रकट होता है? यही प्राकट्य से हमारा क्या परिवर्तन होता है।

अदभुत आज्ञा से हमें अनुभूति की चेष्टा करते है।

"श्री प्रभु" के रूप स्वरूप - साकार दर्शन में "श्री प्रभु" का विग्रह निर्दोष उर्मि भाव सभर पूर्ण गुणों युक्त जागृत कर रहे है। जो दर्शन पानेवाले को तादात्म्य करते है, यह तादात्म्य से अरसपरस निर्दोषता एक दूजे को प्रदान करते है, जिससे जीव तत्व के हर सांसारिक दोष, जो ज्ञान से हो या अज्ञान से हो वो अपनी दृष्टि से निवार देते है, जीव को अपनी असीम कृपा से कृतार्थ करते है। यह परस्पर विरोधी तन मन और धन की क्रियाओं का विच्छेदन करके, अपनी निर्दोषता अपने विग्रह स्वरूप से जीव तत्व में जागृत करते है। यह निवारण लीला से जीव तत्व में पूर्ण गुणों युक्त करके उनमें आनंद की उर्मि निरुपित करते है।
वाह! श्री वल्लभ! वाह!
आपकी कृपा हम पर सदा हमें पुष्टि करती रहे।

यही है दर्शन।

"Vibrant Pushti"

हम सब जीव तत्व है।

याने तत्व के एक प्रकार है।

हम सब तत्व से ही जीते है, संवरते है, कर्म करते है।

हमारा शरीर पंच महाभूत तत्वों से बना है। हम लेते हर श्वास तत्व है, हम आरोगते हर अन्न तत्वों है।

"श्री प्रभु" कक्षा है

भगवान कक्षा है

परब्रह्म मूल है।

जो जीव तत्व अपने आपको पहचानते है वह धीरे धीरे मूल तत्व की ओर प्रयाण करते है।

यह प्रयाण से गति और नित्य स्वरुप बदलता रहता है।

"पवित्रा अगियारस"

पवित्रु - एक सुत्तर का धागा या रेशम की माल्या

"श्री प्रभु" को पहनाना, धराना।

यह रीत है, यह प्रीत है।

पुष्टि मार्ग की यह निराली रीत में हम अपने आप को "श्री प्रभु" को समर्पित के साथ "श्री प्रभु" को हमारी जीवन डोर उनके हस्तक कर देते है।

हे प्रभु! यह जीव की जीवन डोर तुम संभालो, तुम ही संवारो ।

तुम हमारे हम तुम्हारे मेरी हर त्रुटि सुधारदो ।

बाँध रहा हूँ यह जीव तुमसे,

पुष्टि तन मन धन से सेवक धरना ।

जगत संसार के बंधन में,

पुष्टि प्रीत रीत सेवा से साँसे घडना ।

शरण तुम्हारें सदा रहे हम,

हर जीव में पुष्टि रस संस्कृत करना ।

पवित्रु पवित्र के हर तांतण में,

मेरा जन्म जन्म का कर्म पवित्र अपनाना ।

"Vibrant Pushti"

"भगवति जीव"

भगवति जीव कौन है? भगवति जीव की पहचान और स्पर्श कैसे पाना? यही स्पर्श से खुद का जन्म और जीवन कैसे उत्कृष्ट करना?

"भगवति जीव" वो ही है जो जीव - खुद जीवन जीते जीते - खुद के कर्तव्य करते करते सदा विनम्रता और दीनता से और योग्य मति से जीवन कृतार्थ करे या ने सिद्ध करे, शुद्ध करे, सुढ्रड करे, संसार और जगत के हर विषयोंक्त को नष्ट करे। यह जीव भगवति है।

"श्री कृष्ण" की हर चेष्टा, हर क्रिया, हर विचार, हर सूचन, हर रीत, हर सुझाव, हर मति, हर वृत्ति, हर गति विनम्रता, दीनता, विशुद्धता, योग्यता और समान न्याय प्रिय सुविध्या जनक है, जिससे सर्वे का कल्याण हो, धर्म रक्षक हो, तत्व सत् चिंतनीय और साक्षर हो, ऐसा था।

यह इतनी असाधारण और असामान्य रीत है जो परम तत्व में ही जागृत होती है, खिलती है, उत्कर्ष होती है।

एक बात कहो

तुमने पुष्टि मार्ग के कौनसे पुस्तक पढें?

तुम पुष्टि मार्ग के कौन कौनसे पाठ का पठन या स्मरण करती हो?

जितने भी पढें और पठन और स्मरण करें वह सब कहना।

हमारा कहना इसलिए है की तुम्हें तत्व और परम तत्व की योग्य पहचान करावे, समझ करावे।

तत्व और परम तत्व हर ग्रंथ और पाठ में है ही।

"तत्व" जो सर्वथा और सर्वत्र है।

कोई सजीव तत्व है

कोई निर्जीव तत्व है

हम सजीव तत्व है या ने हम जीव तत्व है।

जिसका क्षण क्षण परिवर्तन हो वह जीव तत्व है।

जो जीव तत्व अपने आसपास के हर तत्व का उपयोग करे या उपभोग करे, जिससे तत्व का मूल स्वरूप में परिवर्तन हो।

यह जगत तत्व रुप है।

यह सृष्टि तत्व रुप है।

यह प्रकृति तत्व रुप है।

मूल तत्व जिससे यह जगत की रचना हुई।

इसलिए यह मूल तत्व है।

हमने कहा ने की तुमने कहीं भी यह तत्व का पढा है

कोई बात नहीं .....

कल.....

यह सिद्धांत समझना ही है

क्या कभी "श्री कृष्ण" के विचार धारा से हमने कभी अपनी विचार धारा का समन्वय किया है?

क्या कभी "श्री कृष्ण" की निष्ठा से हमने कभी अपनी निष्ठा का परिक्षण किया है?

क्या कभी "श्री कृष्ण" की नीति से हमने कभी अपनी नीति को प्रमाण किया है?

क्या कभी "श्री कृष्ण" की धारणा से हमने कभी अपनी धारणा को समांतर किया है?

नहीं नहीं! कैसी बात कहते हो?

"श्री कृष्ण" तो भगवान है, हम कभी ऐसा सोच भी नहीं सकते या कर भी नहीं सकते।

ओहहह! कितना दुर्भाग्य है।

ऐसे सोचने वाले का या विरोध करने वाले का।

हम बचनप से जीवन पर्यंत "श्री कृष्ण" को अपनाते है, तो क्या उनके हर विचार, निष्ठा, नीति और धारणा से हम अपने आपको परिक्षित नहीं कर सकते?

सत्य यही है कि हमें हर क्षण अपने आपको "श्री कृष्ण" से परिक्षण करना चाहिए, जिससे हम खुद को समज सके और जीवन और जन्म में परिवर्तन कर सके।

"Vibrant Pushti"

"मूल तत्व"

जो मूल या ने जो तत्व से सर्वे तत्वों का उदभव हुआ, निर्माण हुआ, उत्पन्न हुए, प्रकट हुए, जन्म हुआ।

यह मूल तत्व से ही मूल स्वरूप, मूल पुरुषोत्तम है। सुबोधनीजी में "श्री वल्लभचार्यजी" ने सूक्ष्मता से दर्शाया है, कहा है।

यह जगत तत्वों से है और हर प्रकार के सजीव या निर्जीव तत्वों से ही रचना रचती है, परिवर्तित होती है।

"Vibrant Pushti"

किसने देखा है कान्हा को

उनका हर रंग बिखरते है

उनका हर तरंग बहते है

उनका हर उमंग खिलते है

किसने मेरे प्रियतम श्यामा को

उनकी हर प्रीत रीत प्रकटती है

उनकी हर आहट दिल में गूँजती है

उनकी हर विरह की ज्योत तन मन में उठती है

"सेवा श्री वल्लभ की"

यह पुस्तक का कहीं अंश श्री वल्लभीय व्यक्ति के स्पर्श के लिए तैयार हो गया।

हम विनंती करते है

तुम्हारी अनुभूति से हम काफी उत्तम कर सकते है।

इसमें कोई अन्य दोष या अन्याश्रय नहीं होगा।

यह भी सेवा ही है।

हे अपनी गगरी संभाल!

हे अपनी चुनरी को संभाल!

हे अपना आँचल संभाल!

हे अपने मन को संभाल!

हे अपने तन को संभाल!

हे अपने नयन संभाल!

हे अपने दिल को संभाल!

हे अपने भाव को संभाल!

हे अपनी उर्मि को संभाल!

हे अपनी साँसों को संभाल!

हे अपने अधर को संभाल!

हे अपने पैरों को संभाल!

कहीं मैं लूट न जाऊँ!

मेरी प्रीत की रीत ही ऐसी है

जो खुद लूटूँ और खुद को लूटाता जाऊँ

"Vibrant Pushti"

प्राण प्यारु छे

अतिशय व्हालु छे

वल्लभ-श्री नाथ-यमुना-विठ्ठल-गिरिराज

स्पर्श नु ज्ञान, प्रीत नो आनंद प्राण प्यारो छे

प्राण प्यारु छे

अतिशय व्हालु छे

अष्ट सखा - चौरासी वैष्णव - बसों बावन वैष्णव

जीवन चरित्र ध्यान, पुष्टि सिद्धांत प्राण प्यारो छे

प्राण प्यारु छे

अतिशय व्हालु छे

दर्शन - कीर्तन - सत्संग - सेवा - मनोरथ

तन मन धन लुटाय, जीवन शरण पमाय प्राण प्यारो छे

"Vibrant Pushti"
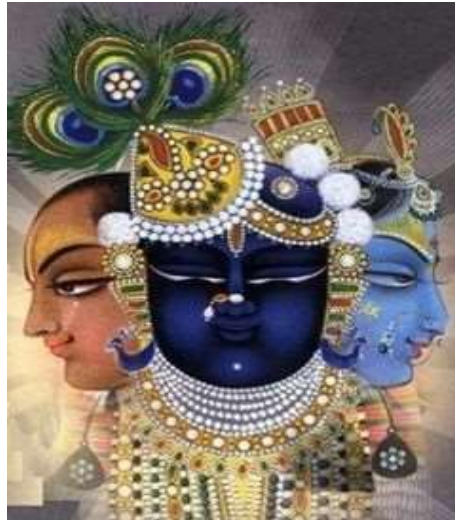
वल्लभ वल्लभ ज्ञान मारा मनने उजाळे छे

मनने उजाळे छे मारा जीवनने उद्धारे छे

पुष्टि प्रीत सेवा दर्शावी

तन मनमां मधुरता जगावी

मारा अंग अंग श्री प्रभु स्पर्श पमाय

रोम रोम प्रीत प्रसराय

वल्लभ वल्लभ ज्ञान मारा मनने उजाळे छे

श्री नाथ चरित्र समझावी

संसार ना दोष नष्ट करावी

मारा आत्म परब्रह्म संबंध जोडाय

जन्म सफल उद्धारण जताय

वल्लभ वल्लभ ज्ञान मारा मनने उजाळे छे

अष्ट सखा कीर्तन गान करावी

जीवन कला रीत शिखवाडी

मारा श्वास श्वास पुष्टि केळवाय

जीवन मधुर मधुर छलकाय

वल्लभ वल्लभ ज्ञान मारा मनने उजाळे छे

"Vibrant Pushti"

"वट सावित्री"

हिन्दू संस्कृति के लिए यह व्रत क्या उजागर करता है?

हर स्त्री के लिए जीवन की कितनी सर्वोच्चता रखता है?

पुष्टि मार्ग में यह रीत अन्याश्रय से कितनी जुडी है?

"Vibrant Pushti"
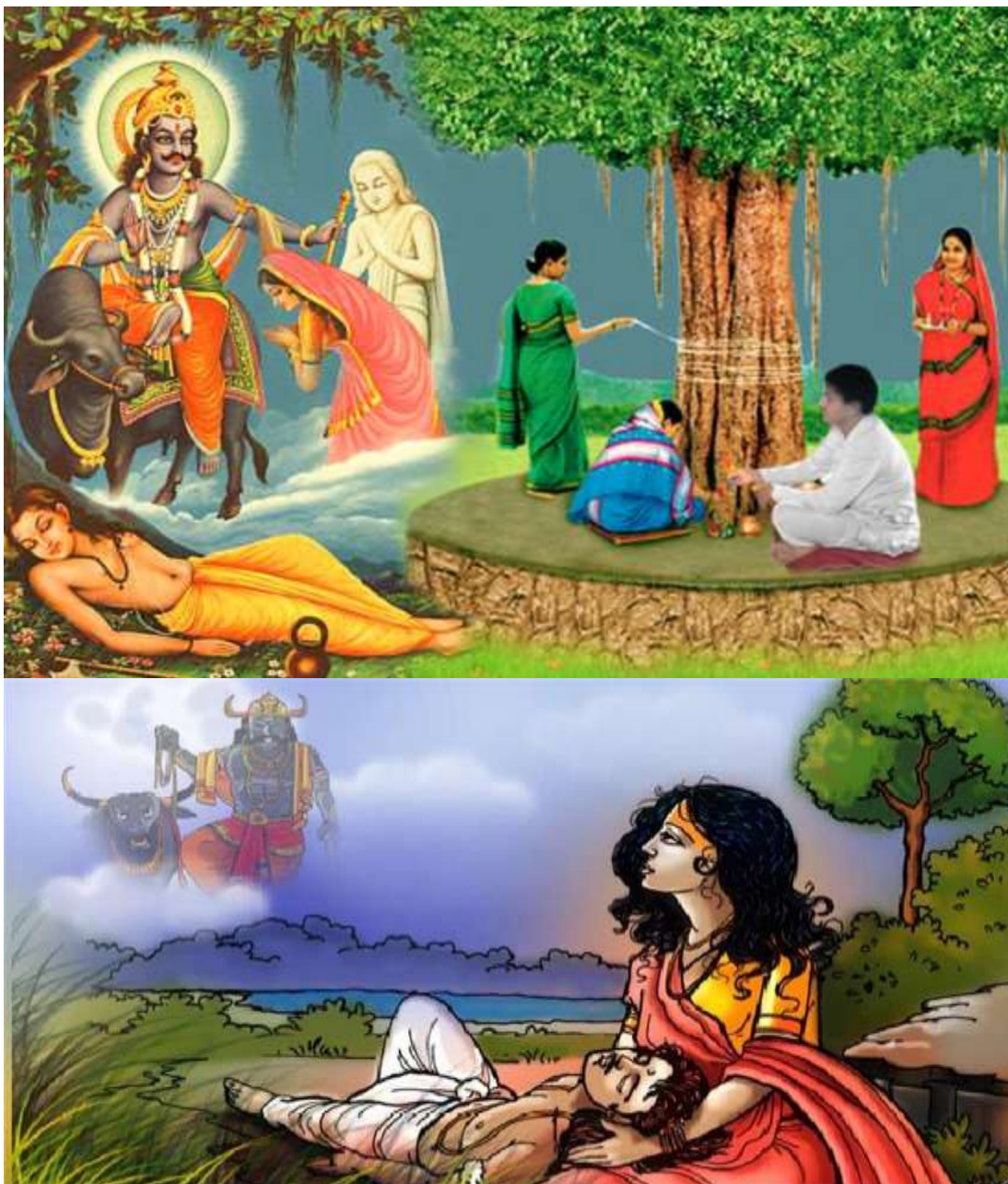
धर्म अधर्म, अधर्म धर्म करि,

विजय जो पाय।

कर्म अकर्म, अकर्म कर्म करि,

शुद्धता जो पाय।

नहीं है सुर, असुर ही समझना पाय ।

नहीं है विक्रमी, अकर्मी कहा जाय ।

ऐसे असुर, अकर्मी से कलयुग जागा जाय।

दिविध आंधरो जीवन जीता जाय।

"Vibrant Pushti"

" पुष्टि सागर श्री सूरदासजी "

हम चल दिये अपनी राहों पर

श्रीनाथजी के स्पर्श के साथ

नयन में बसाया अंग अंग में समाया

साँस में बसाया रोम रोम में जगाया

पलकों से बुलाया होठों से बुलाया

तन मन के आनंद उमंग से बुलाया

कीर्तन से पुकारा डग डग से पुकारा

आरती की नर्तन ज्योति से पुकारा

विरह पावस बूँद से भिगोया

श्रमबिंदु पुरुषार्थ से भिगोया

चरण स्पर्श के संकेत से कहा

दंडवत प्रणाम विनंती से कहा

हे श्री नाथ! सच में तु ही है मेरा नाथ!

हे श्री नाथ! सच में तु ही है मेरा साथ!

तुम से ही है मेरा जीवन आनंद

तुम से ही है मेरा जन्म बंधन

तु ही है मेरा जगत सहारा

तु ही है मेरा प्रियतम प्यारा

"Vibrant Pushti"

नाथ ने नाथा कालीय नाग

नाथ ने नाथा काल यवन

नाथ ने नाथा काल

मेरा नाथ है जो नाग दमन है

मेरा नाथ है जो देव दमन है

मेरा नाथ है जो इन्द्र दमन है

क्या मेरा दोष न निवारेगा?

क्या मेरा जन्म न संवारेगा?

क्या मेरा तेरा मिलन न होगा?

मंगल दर्शन से दोष मिटाया

गौचारण से जन्म संवारा

शयन आरती से मन मिलाया

नाथ मेरा श्री नाथ!

ऐसे ही रहना साथ

ऐसे ही पकडना हाथ

ऐसे ही तोडना जन्म गांठ

ऐसे ही शिखाना प्रीत अपरंपार

तेरे चरणों में है मेरा आधार

"Vibrant Pushti"

"कृष्ण" हर आत्मा का परमात्मा है।
"कृष्ण" हर जीव का रक्षक है।
"कृष्ण" हर संस्कार का शिक्षक है।
"कृष्ण" हर प्रीत का भिक्षुक है।
"कृष्ण" हर ब्रह्म का परब्रह्म है।
"कृष्ण" हर गुण का सतगुण है।
"कृष्ण" हर तत्व का परंतत्व है।
"कृष्ण" हर साँस की विशुद्धि है।
"कृष्ण" हर सिद्धि की परंसिद्धि है।
"कृष्ण" हर ख्याल का सृजन है
"कृष्ण" हर आँगन की तुलसी है।
"कृष्ण" हर दिप की ज्योति है।
"कृष्ण" हर कृति की संस्कृति है।
"कृष्ण" हर ज्ञान की उत्पत्ति है।
"कृष्ण" हर भाव की भक्ति है।
"कृष्ण" हर मुर की मुक्ति है।
"कृष्ण" हर रीत का अर्थ है।
"कृष्ण" हर मार्ग की जागृति है।
"कृष्ण" हर अक्षर की शिक्षा है।
"कृष्ण" हर किरण की शक्ति है।
"कृष्ण" हर सूर का संकेत है।
"कृष्ण" "कृष्ण" "कृष्ण" "कृष्ण"
"Vibrant Pushti"

परब्रह्म के ब्रह्मांड में अनगिनत ब्रह्म है, हर ब्रह्म का खुद का ब्रह्मांड है - खुद का जगत है - खुद का जीवन है। यह जीवन के पुरुषार्थ से ही वह अपना आत्मा को परब्रह्म में परिवर्तित कर सकता है। जो हर एक जन्म से उसकी ओर गति करता है, यह गति उनके विचार, उनकी क्रिया, उनकी संस्कार सिंचन की वृत्ति, उनकी आत्मसात करने की चेतना, उनका प्रकृति के साथ का समन्वय, उनका अनेक तत्वों से स्पर्श से जागती उर्जा, उनके उत्कर्ष से जागते सूर, उनके उत्कर्ष से जागते अक्षर, उनके उत्कर्ष से जागते कर्म फल, उनके उत्कर्ष से जागती परिस्थिति, उनके उत्कर्ष से जागता संजोग, उनके उत्कर्ष से जागता परिणाम, उनके उत्कर्ष से जागती मान्यता, उनके उत्कर्ष से जागता निर्णय, उनके उत्कर्ष से जागता निर्माण, उनके उत्कर्ष से जागती सेवा, उनके उत्कर्ष से जागता धर्म और उनके उत्कर्ष से जागती उर्जा क्या क्या करती है और कर देती है?

सच!

अनोखा है जगत

अनोखा है संसार

अनोखी है सृष्टि

अनोखी है प्रकृति

अनोखा है ब्रह्म

अनोखा है ब्रह्मांड

अनोखा है परब्रह्म

अनोखी है प्रीत

"Vibrant Pushti"

श्रीयमुने

बहती अमृत विशुद्ध निर्मल धारा बन कर

बूँद बूँद आमूल परिवर्तन करे उत्तम तत्व प्रदान

तनुनवत्व तेजोमय रचे पामे परब्रह्म स्नेह

नमन धरु पुष्टि तन प्राण धरु धरु आत्म ज्योत

जीवन जीव संस्कृत स्तुति करु घट घट जागे ज्ञान

तन मन धन भाव जगाये करु भक्ति दान

हे यमुने!

बरस जनम जनम तक पाऊँ व्रज रज धाम

घडी घडी सिंचु प्रीत गुण ध्याऊँ कृष्ण रस पान

सखी वृंदावन सखी गोवर्धन सखी वल्लभ पुष्टि प्राण

"Vibrant Pushti"

सिर्फ और सिर्फ मेरे ख्याल से कहता हूँ जो मैंने अनुभूति पायी है वह दर्शाता हूँ।

पुष्टि भाव प्रमाणित से ही है, ज्ञान के लिये यह प्रमाण नहीं है।

"अधरामृत"

यह वह प्रसाद है जो हम सेवा में हर भोग धरने के बाद जो रहा हुआ आहार

यह वह प्रसाद है जो हम केवल माता के भोजन के साथ साथ या रहा हुआ आहार

यह वह प्रसाद है जो हम केवल पति के भोजन के बाद जो रहा हुआ आहार

यह वह प्रसाद है जो हम केवल अपना बालक के भोजन के बाद जो रहा हुआ आहार

यह वह प्रसाद है जो हम केवल योग्य गुरु के भोजन के बाद जो रहा हुआ आहार

यह अधरामृत है।

"Vibrant Pushti"

"अधरामृत"

अधर + अमृत = अधरामृत

अधर

अधर का अर्थ है मुखडे का एक अंग

अधर का अर्थ होता है जो धर नहीं है

धर याने धारण किया हुआ

धनुर्धर, चक्रधर आदि

अधर याने धारण किया बिन

सत्य समझो!

हम कोई विरोधी भाषी या विरोधी नहीं है।

केवल सत्य को समझने का योग्य प्रयत्न करते जिससे अंधश्रद्धा दूर हो।

पुष्टि मार्ग में अधरामृत का महत्व और श्रद्धा तीव्र है।

सत्य समझते रीत अपनाये उसका आनंद अलौकिक है।

विदित करते है चौर्याशी और बसो बावन वैष्णवों की वार्ता में एक प्रसंग आता है की श्रीवल्लभाचार्यजी और श्रीगुंसाईजी का अधरामृत का प्रसाद ग्रहण किया और वैष्णवों ने आनंद पाया।

सत्यता समझने की कोशिश करें

न कोई श्रद्धा में डूब जाये।

"Vibrant Pushti"

मुझे कभी वल्लभ से मिलादो मुझे कभी विठ्ठल से

पुष्टि सिद्धांत से मेरा जन्म सुधारदे जीना शिखादे

मुझे कभी गिरिराज से मिलादो मुझे कभी अष्टसखा से

भक्ति धारा से मेरा तन सिंचदे मन ढ्रड करदे

मुझे कभी यमुना से मिलादो मुझे कभी बैठकजी से

तनुनवत्व से मुझे विशुद्ध करदे कथामृत पिलादे

मुझे कभी गोकुल में बसादो मुझे कभी नाथद्वारा में

जीवन साँस मेरी कृष्ण से जोडदे श्रीनाथ शरण करादे

मुझे कभी वैष्णव से मिलादो मुझे कभी गोपि से

पुष्टि सेवा प्रीत मुझे शिखादे विरह गीत शिखादे

"Vibrant Pushti"

डग डग श्री गिरिराज को पूछे

स्वर स्वर श्री अष्टसखा को पूछे

द्रष्टि द्रष्टि श्री व्रज भूमि को पूछे

साँस उच्छ्वास श्री वृंदावन को पूछे

मन तरंग श्री यमुना को पूछे

तन नमन श्री नाथजी को पूछे

आत्म ज्योत श्री वल्लभ को पूछे

अक्षर अक्षर श्री सुबोधिनि को पूछे

कहा है मेरा श्याम?

जो श्री गिरिराज परिक्रमा में रहता है।

जो श्री अष्टसखा कीर्तन में रहता है।

जो श्री व्रज भूमि रज में रहता है।

जो श्री वृंदावन ह्रदय में रहता है।

जो श्री यमुना पान में रहता है।

जो श्री नाथजी दर्शन में रहता है।

जो श्री वल्लभ पुष्टि प्रीत में रहता है।

जो श्री सुबोधिनि सिद्धांत में रहता है।

जो मुझे ब्रह्म संबंध से जुडता है

जो मुझे सेवा प्रीत रीत से स्पर्शता है

मेरी राधा! मेरी श्यामा! मेरी साँवरी!

प्रीत की रीत से मुझे तुज में समा दे!

"Vibrant Pushti"

एक बार जगत के सब दु:खो ने मिलकर तय किया की हम सब जगत के ऐसे ऐसे घर पहूँचे जो घर अति समृद्ध हो, अति खुशी में रहते हो, हर पल सुख चैन में जीते हो, जिससे हमारा अस्तित्व मिट जाये और हम सदा के लिए सुख हो जाये।

सब दु:ख जगत के बडे बडे महलों, आशियाना, उंचे उंचे इमारतों और सदा रुपये, पैसे, आभूषणों, ऐश्वर्य वाले घर में पहूँच गये। कहीं समय बित गया जो जो दु:ख जहां जहां पहूँचे थे वह दु:खों ने सोचा काफी समय हो चुका है अब हम हमारे मूल स्थान पर पहुँचे और तय करे किसमें कितना परिवर्तन आया है - कौन कितने सुखी हुए। सब एक के बाद एक अपनी अपनी जगह से निकलने लगे, कहीं दु:ख चल नहीं पाते थे, कहीं दु:ख के नैन में अति गंभीर उदासी थी, कहीं दु:ख त्राहिमाम पुकारते थे, कहीं दु:ख पहले से ज्यादा दु:खी थे।

अरे ऐसा कैसे?

हम जो मानते है कि वह इतना सुखी है, समृद्ध है, खुश है अति संपदा, अढळक ऐशोआराम में जीते है, बडे बडे महलों, उंचे उंचे आशियाना जिसमें सब प्रकार की सुविधाएं वहां दु:खो की यह हालत, पहले से ज्यादा दुर्बल।

ओहहहह!

सब दु:ख चर्चा करने लगे यह कैसी विडंबना - जगत जिसको परम सुखी, ऐश्वर्य वान समझते है वहां हमारी हालत ऐसी? तो अब हम अपना परिवर्तन करने कहाँ जाये?

अक्षय तृतीया के शुभ दिन पर यह बात बहुत समझ कर छेडी है।

आप सब सोचना दु:ख अपना परिवर्तन के लिए कहां जाये।

आप सर्वे को अक्षय तृतीया की हार्दिक बधाई!

"Vibrant Pushti"

"जय श्री कृष्ण"

यह जय घोष और यह सूत्र का प्राकट्य और रचना कैसे हुई? आज हम सत्य कहते है।

"जय श्री कृष्ण"

जब श्री वल्लभ अपनी प्रथम परिक्रमा कर रहे थे और उन्हें संकेत पाया "श्री नाथजी" प्राकट्य का और उन्हें आज्ञा की "श्री वल्लभ" आप पधारो गोवर्धन और हमें पूर्ण स्वरुप से प्रस्थापित करो।

तो वल्लभ जब दौडके गोवर्धन पहूँच कर सब परम वैष्णवों का साथ लेकर श्री गोवर्धन उपर पहूँच रहे थे तब "श्री श्रीनाथजी" अपने पूर्ण रुप से बाहर प्रकट हो कर श्री वल्लभ को मिलने दौडने लगे, यहाँ श्री वल्लभ दौडके "श्री श्रीनाथजी" को मिलने दौडे और दोनों के नैन से नैन एक हुए और जब "श्री श्रीनाथजी" श्री वल्लभ को गले लगा कर प्रथम मिलन किया तब श्री वल्लभ के मुख से प्रकट भये यह जय घोष और सूत्र **"जय श्री कृष्ण"**

यही है प्रथम पुष्टि प्रीत सूत्र की प्राकट्य लीला।

हमें इसलिए जब भी जो भी मिले हमें **"जय श्री कृष्ण"** करना चाहिए।

यही ज्ञान और भाव है परम गुरु अखंड भू मंडलाचार्य श्री वल्लभाचार्यजी का।

बोलो श्री वल्लभाधिश की जय!

साष्टांग दंडवत प्रणाम स्वीकार करें!

"Vibrant Pushti"

"पुष्टि प्रीत मार्ग" बंधारण

"जय श्री कृष्ण"

सेवा

दर्शन

कीर्तन

झारीजी

भागवत कथा

परिक्रमा

"श्री कृष्ण शरणं मम्"

"Vibrant Pushti"

तबडक तबडक सूर कहे
सननन सननन पवन कहे
धणधण धणधण धरती कहे
आजाओ! आजाओ! भक्त कहे
पधारते है श्रीनाथजी भक्तों की पुकार सुन कर
मंगल सुमंगल सृष्टि रचाने
तत्व तत्व को प्रीत शिखाने
जीव जीव में आत्मीयता प्रकटाने
आठ प्रहर के अष्ट रीत से
नैन से नैनन में दरश कर के
मधुर भरी मुस्कान भर के
दीप आरत प्रज्वलित कर के
मयूर पंख तन मन लहरा के
मीठी मीठी बंसी बजा के
गौचारण में साथ निभा के
सच! कैसे है मेरे नाथ!
जो पल पल है मेरे साथ
न कभी भी न छोडे मेरा हाथ
स्वीकार करो मेरे दंडवत प्रिये
स्वीकार करो मेरे हर दोष प्रिये
प्रीत के रंग में रंगदो ऐसे
मैं मैं ना रहू साँवरा करदो ऐसे
"Vibrant Pushti"

कौनसी रज

किसकी रज

हम उन्हें छुए

पुष्टि पथ पर हम चले

स्पंदन हो सारे तन में

भक्ति का स्पंदन

ज्ञान का स्पंदन

गुरु का स्पंदन

प्रभु का स्पंदन

प्रीत का स्पंदन

रज है ऐसी निराली

जो विशुद्ध भाव से जागे

जो समर्पण भाव से जागे

जो आत्म निवेदन से जागे

जो सेवा भाव से जागे

कैसा है यह परिवर्तन उजाला

जो हर सूरज उगाये

सत्य यही है जो

मन स्थिर

धन दान

तन यज्ञ

रचाये

"Vibrant Pushti"

द्वारे पहूँचा श्री नाथ
रज छूया दंडवत किया

किया नैन उद्धार

आरत करी परिक्रमा करी

करी बैठकजी प्रणाम

सिध्यो विठ्ठल नैन धरने

पाठ्यो हरिराय दरशने

नाथद्वारा द्वारे तन मन धन

निरख्यो नेह अपार

"Vibrant Pushti"

बंजर थी यह तन भूमि

न बूँद था न मिट्टी थी

रेत था या कंकर सैलाब

डग भरा वल्लभ चरण ने

फूल खिला पुष्टि अंग में

व्रज हो गया मेरा तन

यमुना हो गई मेरा मन

गिरिराज हो गया मेरा धन

अष्टसखा हो गये मेरा जीवन

श्रीनाथजी हो गये मेरी धडकन

वैष्णव हो गये मेरे दर्पण

"Vibrant Pushti"

पथ्थर बनके पडे थे कहीं सुनी राह में

रज उड कर छूयी वल्लभ सिद्धांत की

मन सिंचि पुष्टि रस श्री यमुना

अंग अंग बसी भक्ति हरिदासवर्य

साँस साँस पुकारे "जय श्री कृष्ण"

रसना गाये "श्री कृष्ण शरणं मम्:"

नैन दरशे श्रीनाथजी घडी घडी

आत्म परमआत्मा प्यास मिटी

"Vibrant Pushti"

पुष्टि स्पर्श से मन जाग्यो तन ऊजळयो

सुधर्यो जन्म जन्म

वल्लभ स्पर्श से यमुना पायी गिरिराज धायो

सेवा स्पर्श से परब्रह्म पामयो भक्ति ठायो

नाथयो कली काल

पुष्टि प्रीत की रीत ऐसी बसे रज रज श्रीनाथ नाथ

" Vibrant Pushti "

"सर्वदा सर्व भावेन भजनीयो व्रजाधिप"

ओहह! "श्री वल्लभ! कितना सरल कह दिया है!

नहीं नहीं! यह सरल नहीं यह अति आवश्यक और गूढ है।

यदि हमारे सब आचार भगवान को अर्पण करने पर भी काम, क्रोध, अभिमान, अहंकार, ममता आदि मानसिक और शारीरिक भाव पीछा नहीं छोडते है, यह भाव भी भगवान को समर्पित करना चाहिए तब ही हमारी चित्त-वृत्ति का निरोध होता है।

यह सर्वे भाव केवल और केवल प्रीत के भाव से ही होगा। यह प्रीति की अभिव्यक्ति चार प्रकार से होती है। यही चार प्रकार के भाव को भक्ति में परिवर्तित याने नाम करण किया है, जो मानव जीवन को योग्य कर सके। यह कर्तव्य शिल और शुद्ध भाव है जो मानव जन्म ले कर मृत्यु परं तक यह भाव सदा रहना चाहिए।

तब ही

"सर्वदा सर्व भावेन भजनीयो व्रजाधिप"

श्री वल्लभ" अति आवश्यक और गूढ रहस्य जता रहे है।

श्री प्रभु प्रत्ये याने जीवन में अपने माता पिता प्रत्ये

"श्री प्रभु मेरे माता पिता है - स्वामी है और मैं उनका आज्ञाकारी पुत्र याने दास हूँ। यह दास्य भाव - दास्य प्रीति - दास्य भक्ति।

श्री प्रभु मेरे आमोद प्रमोद - सुखदु:ख में मेरा साथी है। वह मेरे परम मित्र है - बंधु है जो मेरे हर योग्य अयोग्य परिस्थिति में सदा मेरे निकट है - जो सदा मुझे योग्यता प्रदान करेंगे - यही भाव मैं सदा समाज के हर जीव तत्व के लिए जगाऊँगा तो समाज के हर पहलू में सख्यता जागेगी - यही ही योग्य सख्य भाव है - सख्य प्रीत है - सख्य भक्ति है।

क्रमश आगे कल.......

श्री कुंभनदासजी अति विशुद्ध और सैद्धांतिक पुष्टि सेवक थे। वह हर क्षण अपना जीवन श्री वल्लभाचार्यजी क सिद्धांत और मार्गदर्शन पर करते रहते थे।

कुटुंब का निर्वाह और पुष्टि सिद्धांत से जीना उनकी प्राथमिकता थी।

वह सदा ध्यान में रखते थे श्री वल्लभाचार्यजी का विचार और क्रिया की गति विधि जिससे उनसे कोई दोष या कोई असैध्दांतिक क्रिया जिससे अपने श्री गुरुपरंब्रह्म को अशुद्धता स्पर्शे।

जब जब भी सत्संग या भागवत कथा होती वह सर्वत्र ख्याल रखते।

एक बार गाँव से आया एक व्यक्ति सत्संग में बैठा था, और

उनके कर्ण से स्पर्शते हर अक्षर से वह रोमांचित होता था। धीरे धीरे वह इतना ऐकाग्र हो गया श्री वल्लभाचार्यजी की वाणी से की वह आंतरिक और बाह्यता से विशुद्ध होता चला। कुंभनदासजी तो यह व्यक्ति की लीला देख कर अति आनंद की अनुभूति करने लगे।

थोडा समय बाद कथा विश्राम हुई वह व्यक्ति अपने घर चल पडा। कुंभनदासजी उनकी लीला में मग्न थे।

दूसरे दिन कुंभनदासजी सुबह सुबह उनके घर पहुंचे तो वह व्यक्ति अगले दिन के सत्संग रीत से गृहसेवा कर रहा था। कुंभनदासजी अचंबित हो गये, मुख से पुकार उठे - "श्री वल्लभ"

फिर वह व्यक्ति जो सेवा कर रहा था उन्हें निहारने लगे।

वह कभी श्री प्रभु को स्नान करा रहा था, कभी सामग्री धरा रहा था, कभी हस्त में रखकर नाँच रहा था तो कभी जल पीला रहा था, तो कभी सामने रखकर टुकुर टुकुर देख रहा था।

कुंभनदासजी सोचने लगे यह क्या कर रहा है? सेवा करता है या श्री प्रभुको कष्ट पहूंचा रहा है? सेवा पद्धति का ख्याल नहीं है तो सेवा किसीको पूछ कर करनी चाहिए?

सोचा - हम ही उन्हें शिखाते है।

तुरंत उनके पास पहुंच कर उन्हें सेवा रीत बताने लगे। वह व्यक्ति एक चित्त से समझ रहा था, देख रहा था पर उनके मुख पर कोई आनंद या समझने का प्रतिभाव नहीं था। कुंभनदासजी ने उन्हें समझा कर अपने घर पहुंचे।

प्रसाद ग्रहण करके वह श्री वल्लभाचार्यजी के सत्संग में पहूँचे तो देखा वह व्यक्ति उनसे पहले आकर बिराजमान था।

कुंभनदासजी ने देखा आज उनका मुखडा कुछ उदास और खोया खोया था। इतने में श्री वल्लभाचार्यजी पधारे।

सबने वंदन किया और "श्रीवल्लभ" आज्ञा से सब बैठ गए। सत्संग का आरंभ करने की शुरुआत करते ही श्री वल्लभाचार्यजी की नजर वह व्यक्ति पर आयी।

ओहहह! अचंबित हो गये! क्यूँ ऐसा हुआ? तुरंत कुभंनदासजी पर नजर पहूँची और सब समझ गये।

कुंभना! सेवा कोई रीत नहीं है, सेवा कोई व्यवहार नहीं है, सेवा कोई फरज नहीं है, सेवा कोई प्रणाली नहीं है, सेवा कोई सलाह सूचन नहीं है, सेवा कोई तफावत नहीं है, सेवा कोई ऐसी या सेवा कोई वैसी नहीं है।

सेवा तो एक शिक्षा है,

सेवा तो एक संस्कार है,

सेवा तो एक भाव है,

सेवा तो एक ज्ञान है,

सेवा तो जीवन जीने की कला है,

सेवा तो अपनी माधुर्यता जगाने का स्पंदन है,

सेवा तो एक आंतरिक ऊर्जा जगाने का व्यायाम है,

सेवा तो प्रीत है,

सेवा तो गीत है,

सेवा तो जीवन रथ है,

सेवा तो विशुद्धता जगाने की रीत है,

सेवा तो अलौकिक आनंद है,

सेवा तो जगत को एकात्म करने का साधन है।

"सर्वदा सर्व भावेन भजनीयो व्रजाधिप"

"श्री वल्लभाचार्यजी" ने अति आवश्यक और सूक्ष्मता से यह समझ जगायी है की हमारा जीवन सदा उत्कृष्ट हो।

ज्ञान और भक्ति की जो समझ कर रहे है वह मानव जीवन के लिए सर्वोत्तम है। दास्य भक्ति - सख्य भक्ति की रीत हमें स्पर्शायी अब क्रमश आगे -

वात्सल्य भक्ति - श्री प्रभु हमारी संस्कृति प्रमाणित प्रथम बाल स्वरुप है। "श्री वल्लभाचार्यजी" ने बाल स्वरूप से ही पुष्टि मार्ग विजयी किया है। क्यूँ?

हमारी संस्कृति में हर बालक श्री प्रभु समकक्ष है। क्यूँकी

बालक निर्दोष है।

बालक सरल है।

बालक निर्मल है।

बालक समातंर है।

बालक न्योछावर है।

बालक निष्कपट है।

बालक निर्लेप है।

बालक एक ही समझ - एक ही भाषा - एक ही प्रीत रीत - केवल समान्य याने सर्व मान्य।

केवल आनंद!

न द्वेष - न स्वार्थ - न रमत - न असंतुष्ट

केवल मासूमता!

हर उर्मिओं में प्यार

हर अदा में एकरार

हर लीला में मधुरता

हर स्पर्श में दुलार

हर पुकार में एतबार

हे माँ!

हे तात!

धात्री - ध्राता

और बालक

माता पिता की हर तीव्रता को संपन्न करना - विशुद्‌ध करना - दोष रहित करना

यही वात्सल्य है।

जगत के हर बालक को सिंचना

जगत के हर बालक को संस्कृत करना

जगत के हर बालक को समद्रष्टी निहारना

जगत के हर बालक को संरक्षण देना

जगत के हर बालक को तृप्त करना

जगत के हर बालक में श्री प्रभु निहालना

जगत के हर बालक को प्यार बाँटना

जगत के हर बालक को शिस्तता से संवारना

माँ! मेरी माँ! मेरी माँ!

तात! मेरे तात! मेरे तात!

यह वात्सल्य प्रीत है।

यह वात्सल्य भक्ति है।

"Vibrant Pushti"

कितनी धारणा को मानते मानते हम हमारी संस्कृति जानते समझते और पहचानते जाते है।

हमारा मानव जीवन से हमारे पूर्वज ऋषि जो वैदिक मंत्र से,

पौराणिक संज्ञा और ज्ञान आधारित "व्यासजी" और अनेक मानव जीवन समूह मान्यता, धारणा और आविष्कार से,

जो सांप्रदायिक संज्ञा और ज्ञान उर्पाजीत में आचार्य का अभिधान से।

यही परंपरा सदा बहती रही है, यही बहती परंपरा में जो स्वकिय आध्यात्मिक उजागर करने वाले आत्म तत्व से ही हमारी संस्कृति की धरोहर अखंड है। यह धरोहर का सिंचन केवल और केवल भक्ति मार्ग करता है।

यह भक्ति मार्ग क्या है?

भक्ति मार्ग की रचना कैसे और कौन करता है?

भारतीय मानव जीवन सदा यह मार्ग से आकर्षित क्यूँ होता है?

आज का मानव जीवन भक्ति मार्ग को क्या समझते है?

"Vibrant Pushti"

परिक्रमा करता हूँ

गिरिराज निहारता हूँ

हर डग पर विरह रज चिपकाता हूँ

मेरा विरह अनेक का विरह से तडपता हूँ

डग डग पर संकल्प अग्नि जगाता हूँ

यह करुंगा यह न करुंगा जीवन पथ घडता हूँ

रज रज पर दास्य भक्ति रीत शिखता हूँ

दंडवत किया हर हरिदासवर्य आत्मज को

जान पाया कछु जो जन्म विशुद्ध होय

"Vibrant Pushti"

जागत मनवा सदा सोच जगावत
जन्म जन्म मन क्या क्या करावत
कुछ घडत कुछ करत कुछ नचावत
कही जावत कही पहूँचत नित नवीन कहत
तन सुनत धन सुनत सुनत सारे जगत
मनवा खेल निराला न कहीं स्थिर ठहरत
मन में बसे बहु तडपावत
मन से जुडे बहु नचावत
मन से मन बहु रुलावत
जगत विषय सदा मन सजावत
श्याम मिलन मन सदा मनावत
वल्लभ शिक्षा शिखावत मन को
अष्टसखा कीर्तन सुनावत मन को
नित नित मन श्री नाथ दर्शे
जगाये पुष्टि नयन मन द्वार
क्षण क्षण मन श्याम पुकारत
दौडके बसते मुरारी मन सवार
प्रीत लीला मन चुरावत
मगन मन श्याम भवत
श्याम मन श्याम तन
श्याम श्याम एक घटत
ओहहह मेरे श्याम!

"Vibrant Pushti"

मेरा प्यार! यह सिर्फ अपने दिल में ही धरना!

"परम प्रिय श्री वल्लभ" प्राकट्य दिन

सच कहे तो हमें संकल्प करके जीवन जीते जीते एक विशुद्ध, पवित्र, सुंदर कार्य करने का दिन।

प्रथम तो मैं खुद जीव तत्व पुष्टि मार्ग" श्री वल्लभ" संप्रदाय में जन्म धारण किया है तो "पुष्टि मार्ग" को समझ कर "पुष्टि राह" को शुद्ध करने का संकल्प करके मेरे परम प्रिय श्री गुरु के चरण में मेरी आत्मीय न्योछावरता।

दूजा - मेरी द्रष्टि को शुद्ध करके मेरी नजर में आते हर स्थल, हर अंधश्रद्धा सभर अयोग्य प्रणाली को दूर करना।

तीसरा - हमारे पुष्टि रीत को व्यापार बनाया है उनमें न साथ सहकार - चाहे कितना भी वडिलों या संप्रदाय में कैसे भी स्थान पर हो, हमें योग्य करना है और रहना है।

चौथा - हमें उन्हें ही योग्य समझना है जो "श्री वल्लभ" के सिद्धांत से खुद जीते है - उन्हें नही समझना है जो खुद वल्वभ हो कर हमें गुमराह करते है।

पाँचवाँ - हमें हर साँस से पुष्टि सिद्धांत शिक्षा पानी ही है और यही शिक्षा से नित्य नित्य हमें हमारा जीवन कृतार्थ करना ही है।

"Vibrant Pushti"

हर अमंद रेणु उत्कट हुए

हर साँस विस्फुलींग हुए

हर नाद जागृत हुए

हर द्रष्टि अपलक हुए

हर विचार शुद्ध हुए

हर गति पवित्र हुए

तेरे दर्शन पाये श्री यमुना

घाट विश्राम घट घट जुडे

दोष विषय जगत तुटे

जन्म मरण उद्धारण करे

भवसागर पार उतरे

तनुनवत्व परिवर्तन करे

तेरे बूँद स्फूरे श्री यमुना

प्रीत अमृत हर सूत पिलाये

पुष्टि रीत सृष्टि रचायो

रोम रोम सिद्धांत शिखायो

तन रज व्रज रज सिंचायो

कृष्ण प्रिये आत्म जगायो

तेरी कृपा बरसे श्री यमुना

"Vibrant Pushti"

यमुना धाट को चौबे ने लूटा

व्रज भाषा को गाली से बिगाडा

अज्ञानी सेवा पूजा से श्रद्धा तोडा

आरती पान से अंधकार फैलाया

दूध धारा से अमृत से मृत रचाया

क्या यही है हमारी अंधी पुष्टि धारा

"Vibrant Pushti"

" हे यमुनाजी सदा विशुद्ध तट करना "

हे यमुने!

हे यमुना!

हे श्यामलवर्णा!

हे कृष्णप्रिया!

हे चतुर्थप्रिया!

हे कालिंदी!

हे कृष्णा!

हे असिता!

हे भानुजा!

हे यमी!

हे यमस्वसा!

हे तरणि तनूजा!

हे तरणिजा!

हे कलिंदजा!

हे व्रजरानी!

हे सूर्य पुत्री!

हे सूर्य सुता!

है पट रानी!

हे महारानी!

हे मुकुंद रतिवर्धिनी!

"कृपाजलधिसंश्रिते मम मन सुखं भावय।।"

हम निरंतर आपके आश्रित हो, सदा आपकी कृपा रहे,

सदा पुष्टि प्रीत में भीगोते रहे, सदा आपके आँचल से लिपटते रहे,

यही हमारा परम सुख हो,

हम सदा पुष्टि प्रियजन को दंडवत प्रणाम करते रहे।

"Vibrant Pushti"

"हे यमुने"

कितनी सरलता से

कितनी कोमलता से

कितनी निर्मलता से यह उदगार

यही अर्थ करता है

वात्सल्य! माता यह उदगार सुनने सदा बैचेन रहती है।

"हे यमुने"

सार्थक कर देता है दो आत्मा की एकात्मता!

अपने कोख से जन्म धारण किये हुए आत्मा की आवाज!

"हे यमुने"

संपूर्णता!

पवित्रता!

सर्वथा आनंद की उर्मि जाग रही हो!

पुकार में विश्वास और माँ का श्वास

सृष्टि को तेजोमय कर देती है यह गूँज!

आंतर स्पर्श की ऐसी उर्जा जो हर संसार या जगत के दोष और कष्ट का नाश कर देते है।

अलौकिक शीतल आशरा जो ब्रहमांड में कहीं न मिले।

"हे यमुने"

"Vibrant Pushti"

प्रीत रज को व्रज रज कर दे
प्रीत बूँद को यमुना कर दे
प्रीत विरहाग्नि को सूर्य कर दे
प्रीत मन को मधुरा (मथुरा) कर दे
प्रीत तन को गिरिराज कर दे
प्रीत आत्म को गोलोक धाम कर दे
प्रीत धडकन को वृंदावन कर दे
प्रीत साँस को पुष्टि कर दे
प्रीत विचार को सुबोधिनी कर दे
प्रीत कर्म को रास लीला कर दे
प्रीत जीवन को गौचारण कर दे
प्रीत अंग को श्याम कर दे
प्रीत स्मरण को गोपिगीत कर दे
प्रीत स्पर्श को बंसी कर दे
प्रीत उर्मि को शृंगार कर दे
प्रीत स्वर को कीर्तन कर दे
प्रीत मनुष्य को परब्रह्म कर दे
प्रीत जन्म को प्राकट्य कर दे
प्रीत मृत्यु को अमृत कर दे
प्रीत रस को रसो वै स रास कर दे
"Vibrant Pushti"

"हे यमुना"

यमुना - यम + उना = यमुना

यम - यम ऐसा विशुद्ध और परम आत्म तत्व जो केवल और केवल योग्य न्याय और शिक्षा प्रदान करके जीवात्मा को सुरक्षित करने की, रहने की और अपना कर सलामत होने की साक्षरता का पाठ पढाता है।

उना - छोटी

यम से छोटी बहन = यमुना

यम की छोटी बहन = यमुना

जैसे यम का कर्म सिद्धांत है ऐसा ही यमुना का भी है।

"श्री वल्लभाचार्यजी" ने अति योग्यता से यमुनाजी को पहचाना है, इसलिए तो बार बार नमन करते है और सदा साथ रहते है।

यमुना की सार्थकता और सातत्या सर्वोत्तम है, इसलिए तो व्रज की धरोहर है, श्री राधा कृष्ण लीला की साक्षी है, सहोदर है, सन्मुच्च है।

श्री कृष्ण चारित्र्य की पवित्र धारा है। श्री कृष्ण की प्रिया है और श्री राधाजी की सखी है।

यमुनाजी का चारित्र्य अलौकिक और सकल सिद्धि सभर है, जो जगत के हर जीव तत्व को योग्यता में परिवर्तन करने याने तनुनवत्व प्रदान करने की सार्थकता जताती है। जगत के हर तत्व के दूरित का क्षय करने वाली महान धात्री है।

"हे यमुना"

पुकारते ही अपने तन मन और धन में सूक्ष्मता से बसी अविद्या को नष्ट करती है। सदा ज्ञान और भाव से हर जीव तत्व को प्रीत करती है और जीव तत्व को जागृत करती है।

जगत में जीते है अनगिनत जीवतत्वों के साथ, अनगिनत ज्ञान के साथ, अनगिनत भाव के साथ, अनगिनत विचारों के साथ, अनगिनत क्रियाओं के साथ, अनगिनत योग के साथ, अनगिनत प्रयोग के साथ, अनगिनत संबंधों के साथ, अनगिनत व्यवहारों के साथ, अनगिनत जीवन के साथ, अनगिनत तत्वों के साथ हम भी जीते है।

यह अनगिनत रीति पद्धतियां कहीं कहीं योग्यता प्रतियोग्यता जगाते जगाते जीवन पूर्ण अपूर्ण रचते धरते जीते जाते है। यही जीते जीते जो जीवतत्व को खुद को जैसी जैसी समझ आया ऐसा वह खुद की कक्षा घडता है और जगत में कोई न कोई जीवनशैली संस्कृत करके जगत के कहीं जीवो को जागृत करता रहता है और इससे ही जगत में जीवों का वर्गीकरण होता है और वह जीवों का समूह समाज, संप्रदाय में विघटित होता है और यही जीव का जीवन है।

पर

यही जीवन में कोई अकेला जीव जो सारे जगत को आकर्षित करके कोई अलग योग्य प्रकार का मार्गदर्शन करें तो यह ज्ञानी या भक्त या संत के रुप में प्राधान्य पाता है।

सच कहे तो यही प्रकार का प्राधान्य को समझ कर हर जीव योग्यता से विचरीत हो तो जगत योग्यताबद्ध जीवन जी सकता है, यही समझना ही हमारी शिक्षा है, यही शिक्षा से हम खुद को उजागर कर सकते है साथ साथ जगत को भी उजियारा कर सकते है, यही जीवन की सार्थकता है।

"Vibrant Pushti"

गिरिराजजी के चरण पखालें

यमुनाजी को नयन नीर से पखालें

व्रज रज की रज निराली

चारों ओर गंदकी

फिरभी बार बार तडपाये

क्या यही है मान्यता हमारी?

क्या यही है दिवानगी हमारी?

यमुना यमुना करके निरखते रहे

गिरिराज गिरिराज करके चरण छू ते रहे

न कोई रीति न कोई सूर न कोई वेदना

बस! यूँ ही चलते चलते निभानी होगी

यही है हमारा मुखौटा

यही है हमारा जीवन

यही है हमारा विश्वास

कुछ करें मिलके

या

बैठे रहे बातें करके

जगाये सृष्टि ऐसी जो कृष्ण ने रचाई

खुद जागे ऐसे जो वल्लभ ने चाही

"जिज्ञासा प्रश्न"

"श्री गिरिराज जी" का अस्तित्व या स्वरूप क्या है?

हे गिरिराज! भिन्नता मे अभिन्नता जताते हो।

हर रज को व्रज कर देते हो।

हर बूँद को यमुना कर देते हो।

हर जीव को वैष्णव कर देते हो।

क्या छूया आपको हमने

हमें राधा वर से मिलाने तडपते हो।

हरि मिलन की प्यास को अति तीव्र कर देते हो।

हरि से हरिदास मिले ऐसे हरिदासवर्य हो जाते हो।

"Vibrant Pushti"

" श्री गिरिराज धरण की जय "

" श्री गोवर्धन नाथ की जय "

मन में बसाने गोवर्धन मैं पहूँचा जतीपुरा

तन में बसाने गोवर्धन मैं पहूँचा जतीपुरा

जीवन में बसाने गोवर्धन मैं पहूँचा जतीपुरा

मुखारविंद दर्शन पाया तन मन दंडवत किया

एक एक डग भर कर गोवर्धन परिक्रमा किया

गिरिराज धरण प्रभु तुम्हारे शरण

श्री वल्लभ चरण जीवन तुझे ही अर्पण

व्रज रज वरण आत्म तुझे हक समर्पण

अष्टाक्षर स्मरण "जय श्री कृष्ण" शरण

"Vibrant Pushti"

पुष्प से पुष्टि खिले

सुष्मि से सृष्टि खिले

अश्क से आकृति खिले

इश्क से जागृति खिले

खिले जीवन के रंग

रंग रंग से व्रज रंग खिले

खेले गिरिराज के संग

गिरिराज की रज उडे

उडे अंग अंग यमुना तरंग

पुष्टि मार्ग की रीत निराली

घट घट घट घट श्रीनाथ संगे

"Vibrant Pushti"

"संप्रदाय"

सं - समानता संस्थापक

सं - संस्कृति संस्थापक

सं - सुरक्षित संस्थापक

सं - सुयोग्य संस्थापक

सं - सत्य संस्थापक

सं - सर्वज्ञ वेदांतक

सं - सम्यक परम आत्म तत्व

प्र - धर्म प्रज्वलित

प्र - प्रज्ञान प्रज्वलित

प्र - प्रदान परंतप

प्र - प्रमय बल साधक

प्र - प्रणय प्रणेता

प्र - प्रशांत प्रबंधक

प्र - प्रचुर परमानंदक

प्र - प्रखर नियामक

प्र - प्रज्ञेश पथदर्शक

प्र - प्रज्ञा व्यापक

दा - दार्शनिक

दा - दाता

दा - दिशा सूचक

दा - दास्य उद्धारक

दा - दोष दमनात्मक

दा - शुद्धाद्वैत धारक

य - योग

य - योग्य

य - सदा के लिए स्थापन करना

य - सदा में अयन करना

= संप्रदाय

"Vibrant Pushti"
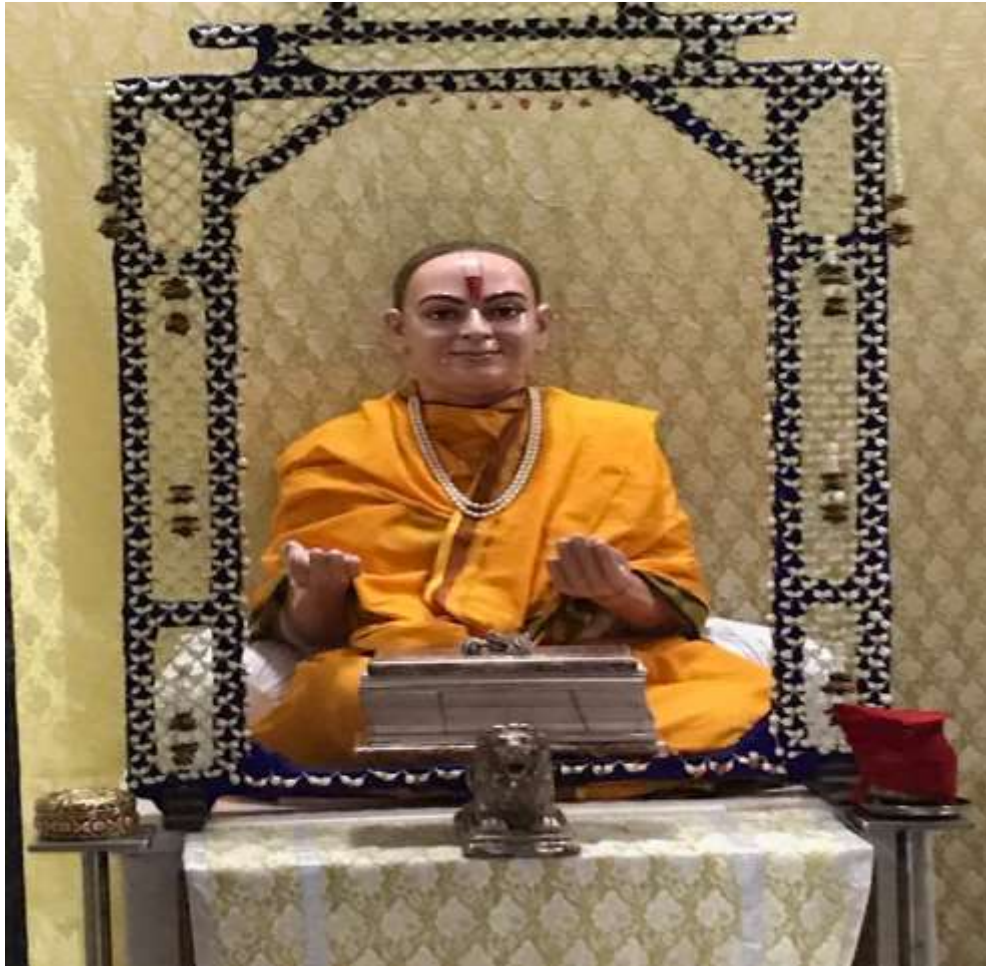
"भक्ति" कैसे समझे?

"भक्ति" कैसे जगाये?

"भक्ति" की अनुभूति कैसे करें?

कान्हा प्रीत भाव का प्रतीक है या परब्रह्म का प्रतीक है?

किताब पढा, प्रवचन सुना, हर सत्संग का भावार्थ जाना पर हमारे मन को, हमारे तन को, हमारी प्रकृति को पहचान कर, हमारी शिक्षा और संस्कार को पहचान कर हम योग्य करते है? जिस तरह से एक सिपाही सबकुछ पढता है, शिक्षा पाता है, यही सर्वत्र का उपयोग खुद की और अपने देश की सुरक्षा के लिए करता है यही हमें भी करना है।

पर

सच कहें तो न खुद को सलामत नहीं रखते है तो औरौंके लिए तो क्या कर सकते है?

आज पुष्टि मार्ग की हालत क्यूँ ऐसी है?

आज हमने जो पुष्टि मार्ग अपनाया है तो हम क्यूँ विश्वास से "श्री वल्लभ" के "श्री यमुना" के "श्री श्रीनाथजी" के नहीं है?

क्यूँकि हम सच्चे सिपाही नहीं है उनके सच्चे सेवक नहीं है।

पाठ करने से, नाटकीय सेवा करने से, धून या भजन गाने से, कोई एक छोटी सी समझ को खुद को बडा ज्ञानी समझलेना योग्य नहीं है।

जबतक खुद को योग्य नहीं करेंगे तबतक कुछ नहीं होगा।

हमारी जीवनशैली में हर पल अन्याश्रय करते है, हमारे विचार और क्रिया को बार बार परिवर्तन करते रहते है तो कैसे पायेंगे भक्ति और भगवान का मार्ग?

हमारे "अष्टसखा" मनुष्य जीवन की अलौकिक मिशाल है। हर पल "पुष्टि सिद्धांत" के सानिध्य में तो श्री वल्लभ" दोडके गये उनके द्वार! यही योग्यता है भक्ति और भगवान की। यही योग्यता है मनुष्य जीवन की

हर एक मार्ग की कोई न कोई कृपा होगी, हर मार्ग योग्य ही होगा। हमें नहीं जानना है।

यह प्रथम विचार परिवर्तन की आवश्यकता है।

हमें केवल अपना, अपनों ने जो जन्म और धारण किया है और हमनें भी सही समझ के यह पुष्टि मार्ग में निरुपित हुए है। हमें प्रथम हमारी जागृतता केलवनी है। हमें हमारे "श्री वल्लभ" के सिद्धांत को अपने जीवन में कृतार्थ करने अपनाते जायेंगे हम अपनी सत्यता पहचानते जायेंगे।

हर पुष्टि विचार और क्रिया को सूक्ष्मता से जानिए और धीरे धीरे निरुपण करते जाना है।

प्राथमिक समझ तो हमें हमारे जन्म धारण से और माता पिता की जीवनशैली से मिले ही है और हम बार बार कथा, पुस्तकें, शास्त्र, प्रवचन, सत्संग से जुडते ही है। हर एक में से सूक्ष्मता तरास कर खुद में ही अपनाना है। यही प्रथम सीडी है पुष्टि मार्ग को पहचानने की, अपनाने की, केलवनी की।

"भक्ति"

भक्त >भगवान

और

भगवान >भक्त

भक्त + भाव + ज्ञान + भगवान = भक्ति

भगवान + भाव + ज्ञान + भक्त = भक्ति

मनुष्य जन्म से ही कितने भाव से जगत में आता है।

वात्सल्य भाव

सख्य भाव

माधुर्य भाव

हास्य भाव

शांत भाव

और

वृत्ति भाव।

यह वृत्ति में कहीं अनगिनत परिस्थिति का निरुपण है। कैसी कैसी परिस्थिति के परिणाम स्वरूप मनुष्य का जन्म होता है। यह परिस्थिति में जो जो भाव जागते है उसके मुताबिक मनुष्य का जन्म होता है। यही जन्म अनुसंधान उनके अंदर जागृत होते भाव का प्रकार से उनका भाव और ज्ञान का समन्वय से वह भगवान की तरफ गति करता है ऐसा उनका विश्वास और भाव द्रूड होता है उन्हें उनकी भक्ति कहते है।

अति आवश्यकता से समझना

"भक्ति"

अपनी संस्कृति के कहीं चरित्र, अपने संस्कृति के घडवैये कहीं ऋषियों,

अपनी संस्कृति के रचहिते कहीं आचार्यें ने भक्ति की व्याख्या, अर्थ, निरुपणता, सैद्धांतिकता अपनी अनुभूति और शुद्ध सत्य की पहचान से जतायी है - दर्शायी है।

भक्ति भाव + ज्ञान + अनुभूति + निस्वार्थ + निष्कपट + निष्काम + न्योछावर + निष्कंटक + निर्मल + निर्मोही और शरणागत हेतुक ही परमार्थि है, परम प्रेम रुपा, अमृत स्वरुपा है।

मनुष्य जगत में है तो उनमें कहीं न कहीं अंशे वात्सल्य, सख्य, माधुर्य, हास्य, और शांत गुण के साथ ही जन्म धारण करता है, जैसे जैसे समझता जाता है तब ही कहीं वृत्ति का जोडना होता है उसी प्रकार वह भक्ति की निरुपणता की कक्षा पाता है। भिन्न भिन्न उपर बताये अंश की मात्रा से उनकी पहचान होती है।

यह सनातन है। हम भी यही अंश निरुपीत है ही पर हम कैसे समझे?

हम समझे हमारी विचारधारा से

हम समझे हमारी जीवनशैली से

हम समझे हमारी वृत्ति प्रवृत्ति से

हम समझे हमारी आंतरिक उर्जा से

हम समझे हमारी घटती जीवन परिस्थिति से

हम समझे हममें उजागर आत्मीय चेतना से

यह कोई और किसीके प्रामाणित नहीं है, यह केवल और केवल निज नित्य स्वरुप से ही योग्यता परखाती है।

हमारे अष्टसखा चारित्र्य यह निज नित्य स्वरुप अनुभूति है। यह चारित्र्य इतने रसात्मक है कि जब भी उनका स्मरण करे हममें वह रस का उदभव होता है। इससे बडा प्रमाण क्या चाहिए!

सच जगत की जो भी संस्कृति यह भक्ति निर्देशक है तो हमारी हिन्दु संस्कृति अपनी योग्यता सार्थक करती है।

मनुष्य के जीवन में भक्ति एक तादात्म्य गुण है और यही गुण से ही वह स्व की पहचान कर सकता है। वह श्री प्रभु की निरोध लीला समझ सकता है।

"Vibrant Pushti"

"काम" शास्त्रोंक्त अर्थ एक विषय।

विषय या ने विष जो सृष्टि को दुष्ट करता है, छिन्न भिन्न करता है। हर जीव तत्व का तत्व को नष्ट करता है, इसलिए काम को जहरीला, विषय उद्भोक्ता कहा है।

साधारणता से सोचे तो "काम" या ने क्रिया। जो क्रिया में पौरुषत्व नष्ट हो उसे काम कहते है। यह पौरुषत्व सृष्टि के हर जीव तत्व में होता है। स्त्री लिंग हो या पुरुष लिंग हो। शास्त्रों ने कहीं अनुभव से पहचाना है कि हर जीव तत्त्व में "काम" गुण है और यह गुण उनकी प्रकृति पर ज्यादा असर रहती है।

शास्त्रों के प्रमाणित स्त्री लिंग या ने स्त्री तत्व काम उद्दीपन है, उत्तेजित है, कामोपयोगी है।

पर मेरा मंतव्य है - यह अयोग्य बात है। स्त्री लिंग या स्त्री तत्व तो सृष्टि के सर्वोच्च और सर्वोत्तम तत्व है। पर पुरुष प्राधान्य जगत में उन्हें निमन्ता पर बिठाते है। यह यह जगत की गंभीर भूल है।

"काम" प्रेम का एक डग है यह डग में हम निज स्वार्थ का पोषण करे तो यह विष हो जाता है और यही विष हमें निम्नता और निंचता की ओर धकेलता है। स्त्री जीव और पुरुष जीव की कडी काम से जुडे पर यह काम में निस्वार्थता हो, पवित्रता हो, शुद्धता हो तो यह काम का निरूपण प्रेम में होता है, यही प्रेम को आत्म विस्मृति करदे तो यह सुयोग्य पुरुषार्थ है। काम को प्रेम में परिवर्तन करना या ने इन्द्रिय तृप्ति का त्याग कर परम प्रिय प्रीत रस जागृत करना यह काम विजयी है जो सदा मधुर सुधा उत्कंठ होती है, यह सुधा अखंड रहे तो यह पुरुषार्थ है।

गोपि प्रीत भाव और ज्ञान शुद्ध अनुराग है।

"निजेंद्रिय-सुख हेतु कामेर तात्पर्य,

कृष्ण-सुख तात्पर्य गोपि-भाव वर्य।

कृष्ण बिना और सब करि परित्याग,

कृष्ण-सुख हेतु करि शुद्ध अनुराग।।"

"श्री वल्लभाचार्यजी" यही सातत्य से कहते है अगर काम को पुरुषार्थ से परिवर्तन करदे तो काम शुद्ध और पवित्र हो जायेगा।

"यदि श्रीगोकुलाधीशो धृत: सर्वात्मना ह्रदि।

तत: किमपरं ब्रूहि लौकिकैवैॅदिकैरपि।।"

केवल और केवल श्रीगोकुलाधीशो न कोई ओर या ने पूर्णत समर्पणता, तन मन धन रुप यौवन लोक परलोक सब को श्रीगोकुलाधीशो अर्पण। तत् सुख सदा शरणम्।

"Vibrant Pushti"

कैसी है यह धूलि बिखरे

गौ चरण से न्योछावर रज उडे

रज रज से मिले गौ निर्मल

भांभरती दौडे मिलने गोपाल

गोवर्धन की गौ अमृता

स्पर्श स्पर्श से आये गोवर्धनधारी

छू ये गौ नयन अंग अंग

सदा रहे वल्लभ संग संग

"Vibrant Pushti"
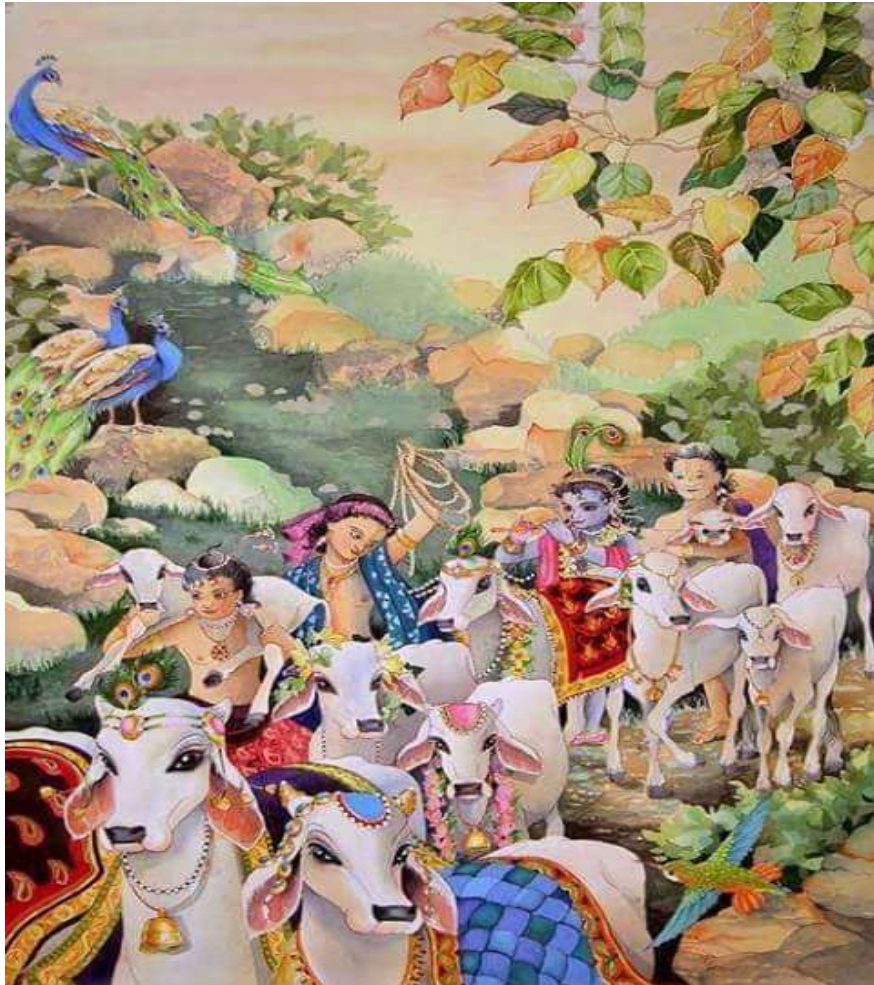
नित्य रहे पुष्टि स्मरण में

गिरिराज स्पर्शे रज रज में

तन गोकुल तो साँस यमुना

मन में बसे अष्टसखा रचना

नित नित निधि दर्शन पाऊँ

रोम रोम षोडश् सत्संग बसाऊँ

जिते जिते श्री वल्लभ निहालुँ

पुष्टि प्रीत रीत प्यास बढाऊँ

"Vibrant Pushti"

नयन में बसे तो नवनीत प्रियाजी

मुखडे पर रमे तो मथुरानाथजी

होठों से पुकारे तो हरिकृष्णजी

मन से जुडे तो मदन मोहनजी

तन से तडपते तो तिलकायतजी

आंतरिक विरह से अष्टसखाजी

"Vibrant Pushti"

व्रज की रज छू लो

बरसाना का रंग छू लो

गोवर्धन का पथ छू लो

वृंदावन का रस छू लो

नंदगांव का लठ्ठा छू लो

मथुरा यमुना पान छू लो

दंडवत दंडवत करके हर पुष्टि छू लो

यही है पुष्टि प्रीत पहचान

हम भी आप सर्वे को "जय श्री कृष्ण" से छू ले

यही है जीवन का कर्म सिद्धांत

"Vibrant Pushti"

"कुंज एकादशी"

कुंजन भरे प्रीत रस की बूँदे

बिखराऊ प्रकृति की राहें

साँवरा आये जो राहें

मेरी तन मन धन पीता जाये

मैं हो जाऊँ उनकी चरण रज

बस जाऊँ उनके अंग

"Vibrant Pushti"

मिसरी से खेले कान्हा

कान्हा से खेले यमुना

यमुना से खेले वल्लभ

वल्लभ से खेले अष्टसखा

अष्टसखा से खेले वैष्णव

वैष्णव से खेले पुष्टि मार्ग

"Vibrant Pushti"

"शिव" कितना सरल और अनोखा नाम है।

नाम से कहे तो हमारे शास्त्रों कहते है के नाम ही वह आत्म तत्व की कर्म निष्ठा है, सार्थक प्रतिष्ठा है।

"शिव" कहते, सुनते और पुकारते ही हमारा तन मन में एक कृति, संस्कृति और प्रतिक नयनों में जाग जाता है, तन में स्पंदन उदभवता है, मन में आनंद खिल जाता है, और धन या ने बुद्धि में एक चरित्र उत्स होने लगता है।

"जय जय शिव शंकर"

प्रथम तो प्रणाम!

हमारी संस्कृति के संपूर्ण आराध्य!

अगणित अखंड अलौकिक गुण और रीत भरी है यह सर्वम आत्मीय तत्व में। जो पुरे जगत को एक ऐसी कृति और संस्कृति में संस्कृत करता रहता है जिससे सारा जगत यह परब्रहम तत्व को "महादेव" कहते है।

ब्रहमांड की हर सूक्ष्म से सूक्ष्मता में यह परम तत्व का सामर्थ्य प्रसरा हुआ है। यह हर तत्व, हर जीव को अपने से जुडा रखतें है।

खुद निष्कलंक, निस्वार्थ, निराभीमानी, निर्गुण है। सदा निर्मोही, निर्मल, निर्माण संस्करण से भरे है। हर जीव को शिव करने के परिवर्तन में अतूट और अभिन्नता से सभर है, चाहे जीव कैसी भी परिस्थिति में हो, रीत में हो, कृति में हो। इसलिए यह परम आत्म तत्व को "महेश" भी कहते है।

सदा दंडवत प्रणाम मेरे प्रिय वर!

पुष्टि मार्ग संस्कृति के प्रथम वैष्णव है। सच कहे तो यही परम परब्रहम है जो सदा सरल है कि हर पर्मोच्च आधिपत्य देव को भी यह देवत्व उनके लिए खुद का पर्मोच्च आधिपत्य आत्म तत्व ठुकराते है और सदा उनसे जुडने, उनके सानिध्य में, उनके शरण में समर्पित करते रहते है। यही यह " परम शिव" की लाक्षणिकता है।

कहीं नासमझ धर्म प्रतिष्ठित प्रतिनिधिऔंने यह तत्व को सामान्य करने की चेष्ठा की है पर वह निम्नता न सार्थक होती है और अयोग्यता प्रदान करती है।

जिससे कहीं संप्रदाय यह नाम स्मरण से भी इतराते है, पर यह गलत और नासमझी दर्शा रहे है।

"शिव" है तो ही विश्व है।

विश्व है तो ही "विष्णु" है।

"विष्णु" है तो वैष्णव है।

"वैष्णव" है तो संस्कृति है।

सदा वंदन करे यह परब्रह्म को

सदा जागृत करे यह संस्कृति को

जो शिव है तो हम जीव है।

"Vibrant Pushti"

आज कुछ बरसा यह सिंचन में

तन हरखाये मन मुस्कुराये

आत्म से आत्म जुडाये

वल्लभ से अष्टसखा जुडे

यमुना से व्रज रज जुडे

गिरिराज से गौ रस जुडे

अष्टसखा से प्रीत रस जुडे

ऐसे ही मेरे साँस से पुष्टि जुडे

"Vibrant Pushti"
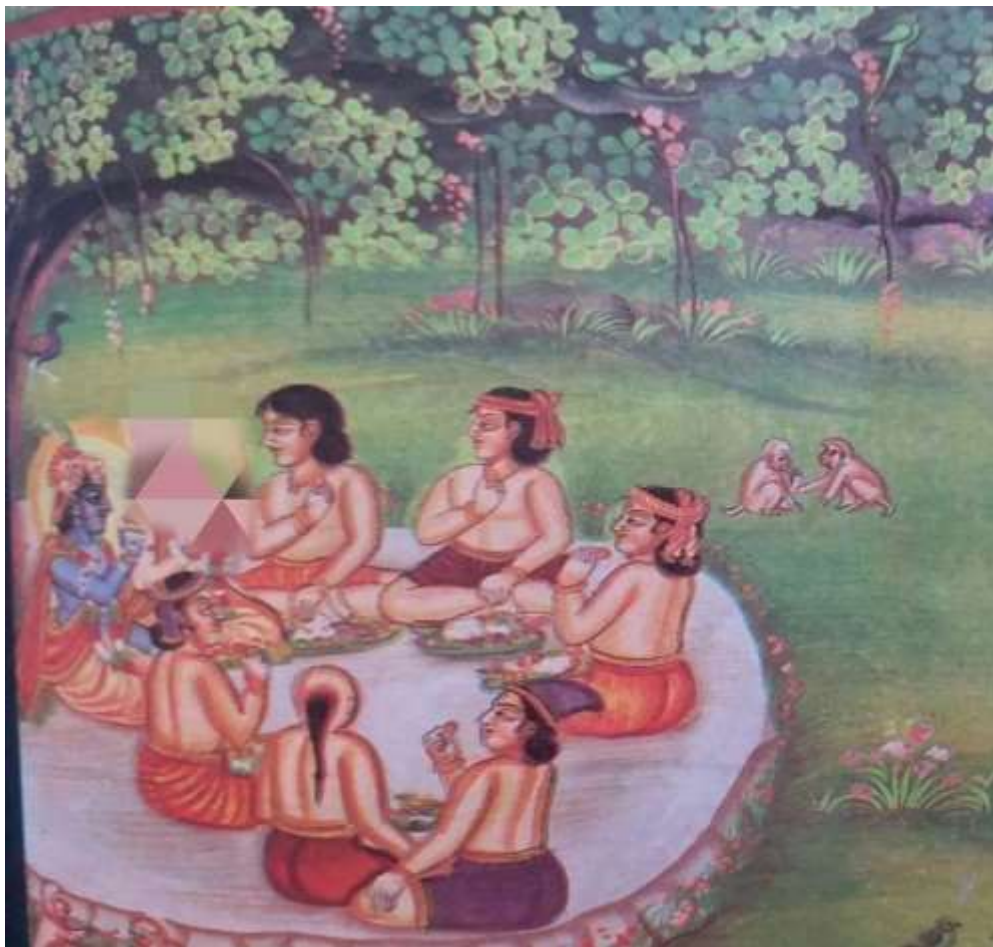
कृष्ण! कृष्ण! क्या है कृष्ण में ऐसा की हम **कृष्ण! कृष्ण!** करते है?

कभी एकांत में बैठकर सोचा है?

सारा समाज **कृष्ण! कृष्ण!** के पीछे दौड रहा है। कभी सोचा है यह कैसी धारा है, जिसमें सब बह रहे है?

कृष्ण पुकारने से **कृष्ण** को हम जानेंगे, **कृष्ण** को हम समझेंगे, **कृष्ण** को हम पायेंगे?

नहीं! नहीं!

भाव जगाने से हमें **कृष्ण** को छु लिया!

नहीं नहीँ!

स्मरण करने से

दर्शन करने से

सत्संग करने से

मनोरथ करने से

भागवत सप्ताह बिठाने से

परिक्रमा करने से

राज भोग धराने से

शृंगार सजाने से

धून गाने से

आदि आधार भूत साधन अपनाने से **"कृष्ण"** जान लिया, समझ लिया, पहचान लिया, पा लिया, अनुभूत कर लिया!

नहीँ नहीँ!

ऐसा नहीं है। तो क्या है?

कृष्ण! कृष्ण!

"कृष्ण" को जानने के लिए आंतरिक भाव के साथ आंतरिक ज्ञान होना आवश्यक है।

"कृष्ण" को समझने के लिए अपना तन मन आत्म और धन की योग्यता समझनी चाहिए।

"कृष्ण" को पहचानने के लिए बाह्य और आंतरिक परिवर्तन की अनुभूति होनी चाहिए।

"कृष्ण" को पाने के लिए हमारा तन, मन, धन, और आत्म प्रीत की रीत अपनानी चाहिए।

हम खुद खुदको प्रेम नहीं करते है तो **कृष्ण** से प्रीत कैसे होगी?

हम खुद यह जगत में है, यह क्यूँ है? यह ही नहीं जानते तो **कृष्ण** को कैसे जानेंगे?

हम खुद यह संसार की रीत में क्यूँ है? यह रीत नहीं समझते तो **कृष्ण** को कैसे समझेंगे?

हम खुद अपने साथ रहते अपने माता पिता, पत्नी, और अपने से जने हुए बालक को नहीं पहचानते है? तो **कृष्ण** को कैसे पहचानेंगे?

"Vibrant Pushti"

सच में

हर पुष्टि सिंचन से हममें **"जय श्री कृष्ण"** का भाव जागे,

हर पुष्टि चित्रजी के दर्शन से हममें **"जय श्री कृष्ण"** अंतर में प्रकटे

हर पुष्टि सत्संग में कर्ण या मुख स्पर्श से हममें **"जय श्री कृष्ण"** की अनुभूति होये

हर पुष्टि मनोरथ में तन मन धन की सेवा रीत से हममें **"जय श्री कृष्ण"** उजागर हो

हर पुष्टि उत्सव से रोमें रोम में पुष्टि रंग निखरने से हममें **"जय श्री कृष्ण"** रंग खिलें

हर व्यक्ति जब जब भी जहां जहां भी पुष्टि पथ पर मिलने से हममें **"जय श्री कृष्ण"** का उच्चारण जागे

तो समझना हममें

पुष्टि सिंचन भाव जाग रहा है।

पुष्टि दर्शन अंतर में प्रकट हो रहा है।

पुष्टि सत्संग की अनुभूति हो रही है।

पुष्टि मनोरथ उजागर हो रहा है।

पुष्टि उत्सव रंग खिल रहा है।

इसलिए पुष्टि आनंद के लिए सर्वे व्यक्ति को **"जय श्री कृष्ण"** कहने से या झिलने से हम "वैष्णवता" का अलौकिक स्पर्श करके

"श्री वल्लभाचार्यजी" को पुष्टि सिद्धांत सुधा दंडवत प्रणाम करते है।

"श्री यमुनाजी" को पुष्टि रस सुधा पान कराते है।

"श्री गिरिराजजी" को पुष्टि रज भक्ति रस प्रदान करते है।

"श्री अष्टसखाजी" को पुष्टि कीर्तन रस अर्पण करते है।

"Vibrant Pushti"

"शयन दर्शन" शयन का अर्थ पोढना या सो जाना नहीं है। शयन का अर्थ है श + अयन = शयन।

श - शांत - शरण - शमन - शोध - शपथ।

अयन = गति - गमन - मार्ग - योग्यता की ओर - निश्चित दिशा की ओर - आश्रम - वास करना।

"शयन दर्शन"

श्री प्रभु पुरे दिन कार्य रत रह कर अब खुद को शांत करने के लिए स्थितीप्रज्ञ अवस्था के लिए निश्चित स्थान पर पहुँचना।

श्री प्रभु पुरे दिन के कार्य सिमट कर खुद को योग्यता की ओर गति करने अपने तन मन और धन को नव चेतना प्रदान करने निश्चित आश्रम में वास करने पहूँचना।

श्री प्रभु पुरे दिन के कार्य की नित्यता के लिए जगत के सारे तत्वों को आंतरिक और बाह्य परिक्षण करने योग्य शोध सिंचन करने अपने आवास में पहूँचना।

श्री प्रभु पुरे दिन के क्रिया और सोच के अनुसार गति करते समय अनुरूप खुद की भूमिका का पृथक्करण करने अपने आप को अपनी ही शरण में धर कर तनुनवत्व धारण करने अपने आप को अपनो से समर्पित करते है।

श्री प्रभु पुरे दिन को जगाये हुए हर तत्व की उर्जा का शमन करके आते हुये काल से नये रीत और प्रीत से उजागर करने हर एक तत्व को योग्य स्थान पर प्रस्थापित करते है।

यही "शयन" है।

हम यही **"शयन"** का दर्शन करके खुद में भी यही प्रकारके परिवर्तन की शिक्षा संस्कार ग्रहण करने हम **"शयन दर्शन"** करते है।

यही है **"शयन दर्शन"** की महत्वता!

"Vibrant Pushti"

हमारी ऐसी शिक्षा कहा कि हम हमारी संस्कृति खो दे?

हमारा ऐसा अन्न कहा कि हम हमारा इमान खो दे?

हमारा ऐसा पानी कहा कि हम हमारा सिंचन खो दे?

हमारी ऐसी धरती कहा कि हम हमारा घर खो दे?

हमारी ऐसी हवा कहा कि हम हमारी साँस खो दे?

हमारा ऐसा कर्म कहा कि हम हमारा जीवन खो दे?

हमारा ऐसा धर्म कहा कि हम हमारा विश्वास खो दे?

हमारा ऐसा आसमान कहा कि हम हमारी सलामती खो दे?

हमारा ऐसा रहना कहा कि हम हमारा देश खो दे?

जागो जगाये माता हिन्दुस्थान

समृद्ध जीवन काज

जागो हे हर कृष्ण कन्हैया!

सपूत बन कर कुरबान करदो

भारत की रक्षा काज

जागो हे हर कृष्ण कन्हैया!

योग्य नागरिक बन कर भ्रष्टाचार मिटादो

लाडकवायी सरकार रचादो

हे लाडकवाया लाल

जागो हे हर कृष्ण कन्हैया!

माता बहन पत्नी की लाज बचादो

घर घर भाईचारा की गूँज उठादो

हे भारत के पालनहार

जागो हे हर कृष्ण कन्हैया!

"Vibrant Pushti"

निरखु निरखु श्री वल्लभ सेवा रीत

स्नान करावे केसर घोळी श्री वल्लभ सूत

अंग अंग पहेरावे स्वामीजी पीलु पीतांबर

भाले सजावे गिरिराज व्रज रज तिलक

हडपची हिरलो चिपकावे विठ्ठल नाथ

गोकुलनाथजी धरावे तुलसी वर माल्या

झारीजी यमुना पान राखे मुख सनमुख

आरती अष्टसखा करे संग कीर्तन ध्यान

धन्य धन्य पुष्टि सेवा नीत नीत पामीऐ

जय श्री कृष्ण निहाळीये तत्वें तत्वें

"Vibrant Pushti"

तुम अपना दिल लूटावो

तुम अपना भाव लूटावो

तुम अपना तन मन लूटावो

तुम अपना अंतरंग लूटावो

तो

हम भी उनके चरण की सेवा करें

"Vibrant Pushti"

" प्रीत की रीत निराली

जो सेवा करे वो प्रिय रस भरे

वो ही रसोवैस है "

गिरिराज से नयन

गिरिराज से दर्शन

गिरिराज से पावन

गिरिराज से वंदन

गिरिराज से कीर्तन

गिरिराज से नमन

गिरिराज से आंगन

गिरिराज से मगन

गिरिराज से वचन

गिरिराज से लगन

उन्हें ही भाता है जो गिरिराज से जुडते है,

गिरिराज को छूते है,

गिरिराज को कहते है।

"Vibrant Pushti"

तुम्हें नयन से निहाले तो ऐसी

तुम्हें श्वास से स्पर्शे तो ऐसी

तुम्हें ख्याल से सोचे तो ऐसी

तुम्हें विरह से तडपाये तो ऐसी

तुम्हें प्रीत से जुडे तो ऐसी

तुम्हें अंतरंग से रंगे तो ऐसी

तुम्हें आत्म से प्रकटाये तो ऐसी

तुम्हें जगत से नजारे तो ऐसी

तुम्हें धर्म से संस्कृते तो ऐसी

तुम्हें तन से तरंगे तो ऐसी

तुम्हें मन से मनाये तो ऐसी

तुम्हें दिल से डूबाये तो ऐसी

कैसी है तु! पल पल निकट

सकल सकल साथ साथ

सागर सागर पार पार

अंबर अंबर धार धार

किरण किरण ज्योत ज्योत

हाँ! इसलिए तो "पुष्टि" है।

" Vibrant Pushti "

गिरिवरजी की परिक्रमा ध्यानी

यमुनाजी की धारा झरानी

व्रज रज की महक जगानी

तन मन धन की पुष्टि बहानी

जान्यो श्याम श्यामा सुहानी

जन्म सिद्धायो सुबोध पहचानी

मधुर मधुर गायो अष्टसखा वानी

पठार्यो वल्लभ जुग जुग जानी

ऐसी रीत है पुष्टि प्रीत अपनानी

सदा सदा यमुना निकुंज ठानी

"Vibrant Pushti"
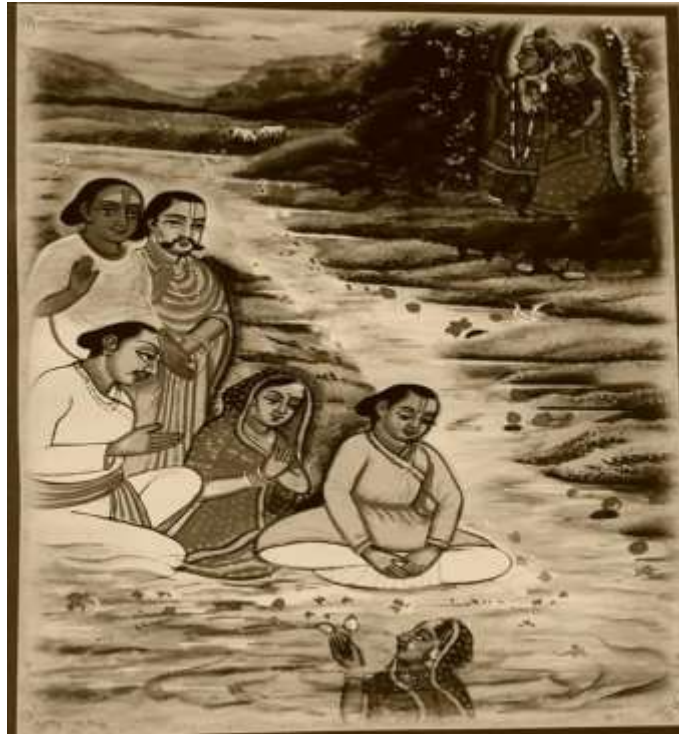
भूलत जागत जागत खोवत खोवत भूलत बार बार जागत
जीवन जीता आया
धर्म अपनाया
समाज अपनाया
अपनाया जन्म भूमि संस्कृत
जैसे जैसे बहे धारा
हर धारा में बहता गया
न समझ आया कैसी है धारा
डूबता डूबता जीता आया
स्मरण पाया एक पल एक परब्रह्म
खुद जागने से पाओगे सत्य समझ
जागता जागता हर एक को जगाया
तब समझ पाया ब्रह्म संबंध
आनंद लूटाये आनंद पाये
भौतिक बांधे भौतिक बंधाये
जीवन सुख दुःख में बाँटे
हम शिखे यही जगत से
आनंद परमानंद कैसे लूट लूटाये
जो खुद को जगाता जाय
वंदन करते है यही जगत को
प्रणाम करते है यही प्रकृति को
हमें पल पल उजाला करता जाय
"Vibrant Pushti"

न जाने धर्म अपनाया

न जाने पाठ पठन किया

न जाने भागवत सप्ताह आयोजन रचाया

न जाने गुरु दिक्षा धारी

कैसी है यह विडंबना जो संजोग संजोग सब कुछ अपनायी

यही है मेरा जीवन

इसलिए है मेरा जन्म

एक दौडे तो मैं दौडा

पीछे पीछे नयन बंधाई

मैं पुष्टि तु पुष्टि कह कर

जीवन खेल रचाई

अष्टसखा न समझ पाया

षोडश शिक्षा न समझ आया

इसलिए आज

दंडवत बार बार चरण पठाया

"Vibrant Pushti"

पुष्टि से बसे सुबोध वल्लभा

कीर्तन से बसे अष्टसखा ज्ञान

व्रज रज से बसे गिरिराज वर्य

तनुनवत्व से बसे चतुर्थ प्रिया

वैष्णव से बसे व्रज गोकुल वास

ब्रह्म संबंध से बसे परब्रह्म श्रीनाथ

अष्टाक्षर मंत्र से बसे निधि स्वरुप

पुष्टि सेवा से बसे प्रियतम श्याम रुप

"Vibrant Pushti"

मन से सदा मनन करना

तन से सदा तनमय रहना

इन्द्रियों से सदा पुष्टि सेवा करना

आत्म से सदा परम वैष्णव रज स्पर्श पाना

यही पुष्टि मार्ग है

हर नयन में घनश्याम बसे

"दर्शन" जो समीप है, जो निकट है, जो जगत के हर एक पदार्थ को पहचान सके।

दर्शन नयनों से होते है पर बिना नयनों से भी होता है।

दर्शन विचार से, दर्शन स्मरण से, दर्शन स्वर से, दर्शन गीत से, दर्शन संगीत से, दर्शन सुगंध से, दर्शन कीर्तन से, दर्शन भाव से, दर्शन भजन से, दर्शन भक्ति से, दर्शन ज्ञान से, दर्शन साँस से, दर्शन उर्जा से, दर्शन स्पर्श से, दर्शन सेवा से, दर्शन प्रसाद से, दर्शन रंग से, दर्शन तरंग से, दर्शन वायु से, दर्शन जल से, दर्शन आधिभौतिक से, दर्शन आधिदैवीक से, दर्शन आआध्यात्मिक से, दर्शन गुरु से, दर्शन गुरु आज्ञा से, दर्शन चरित्र से, दर्शन जिसके द्वारा से, दर्शन आयोजन से, दर्शन प्रयोजन से, दर्शन संकेत से, दर्शन लीला से, दर्शन कर्म से, दर्शन व्यूह से, दर्शन रीत से, दर्शन विरह से, दर्शन मिलन से, दर्शन संकल्प से, दर्शन ख्याल से, दर्शन ख्वाब से, दर्शन इच्छा से, दर्शन योग से, दर्शन भोग से, दर्शन ध्यान से, दर्शन समर्पण से, दर्शन शरणागत से, दर्शन संबंध से होते है।

दर्शन के कहीं प्रकार है, हर प्रकार से दर्शन करने से दर्शन की योग्यता समझ आती है, जिससे दर्शन की सायुज्यता, सार्थकता, सामर्थ्यता की अनुभूति होती है। जिससे हममें जिज्ञासा, संस्कार, पद्धति प्रकट होती है। यही जिज्ञासा, संस्कार या ने धर्म, और पद्धति हमारे जीवन को घडता है और हमारी पहचान कराता है।

यही सत्य है।

"Vibrant Pushti"

तन मेरा क्या है?

छूआ है जबसे व्रजरज से

छूआ है जबसे गिरिराज परिक्रमा से

छूआ है जबसे यमुना पान से

छूआ है जबसे रमण रेती से

छूआ है जबसे दंडवत प्रणाम से

छूआ है जबसे झारीजी सेवा से

छूआ है जबसे नयन दर्शन से

छूआ है जबसे ख्यालों से

छूआ है जबसे मनोरथ से

तन तेरा हो गया मन न्योछावर हो गया

तन नवत्व हो गया आत्म समर्पण हो गया

तन शुद्ध हो गया चित्त हरण हो गया

तन सेवा हो गया धन प्रसाद हो गया

तन वपु हो गया जीवन भक्ति हो गया

रीत है पुष्टि रंग की ऐसी

शरण है पुष्टि स्पर्श की ऐसी

सुगंध है पुष्टि संग की ऐसी

संबंध है पुष्टि दर्शन की ऐसी

"Vibrant Pushti"

कैसे कैसे विचार है

कैसे कैसे कहना है

कैसी कैसी बातें है

कैसी कैसी रीत है

पुष्टि को जानने पुष्टि ब्रह्मसंबंध समझे

पुष्टि को समझने पुष्टि दर्शन समझे

पुष्टि को पहचानने पुष्टि चरित्र पहचाने

पुष्टि का स्पर्श करने पुष्टि सेवा करें

पुष्टि की महक पाने पुष्टि सत्संग पाये

पुष्टि को आंतर बाह्य शुद्धि जगाने पुष्टि उत्सव जगाये

पुष्टि रस पीने पुष्टि रसात्मक षोडश रीत पीये

पुष्टि प्रीत में डूबने पुष्टि जीवन अपनाये

क्यूँकी

खुद ही वल्लभ!

खुद ही यमुना!

खुद ही गिरिराज!

खुद ही अष्टसखा!

खुद ही श्री नाथजी!

न भरोसा किसी पर जो कोई भी कुल के हो

हमें तो खुद को वैष्णव होना है

इसलिये

मेरे तन मन धन श्री पुष्टि के चरणों में

"Vibrant Pushti"

कभी सोचा है कभी समझा है

कृष्ण कौन है? यमुना कौन है?

कभी जागा है कभी अपनाया है

वल्लभ कौन है? गिरिराज कौन है?

कभी छूआ है कभी एहसास किया है

व्रज रज क्या है? गोकुल क्या है?

कभी बसाया है कभी जगाया है

अष्टसखा क्या है? वैष्णव क्या है?

कभी स्पर्शा है कभी सिंचा है

सेवा क्या है? परिक्रमा क्या है?

कभी बसाया है कभी निभाया है

दर्शन क्या है? पुष्टि सिद्धांत क्या है?

कभी पहचाना है कभी जाना है

मैं कौन हूँ? जगत क्या है?

यही मन है यही तन है

यही संसार है यही जन्म है

समझे तो पाया

जगाया तो पाया

यही है परब्रह्म की रचना

"Vibrant Pushti"

मंदिर पहुँचते है

दर्शन करते है

दंडवत करते है

और

भेट लिखाते है

या

सन्मुख भेट धरते है।

क्यूँ?

" Vibrant Pushti "

" सत्संग जगाये वॉ पुष्टि

जो अर्थोपार्जन करे वॉ अनुष्टी "

"मार्ग तो ऐसा लगे बहुत सुंदर है"

ऐसा लगे.... ओहहह!

"वह समझ या नजर नहीं है"

नहीं नहीं ....

इसे ही संसार की रीत

और जगत की नीति कहते है।

"Vibrant Pushti"
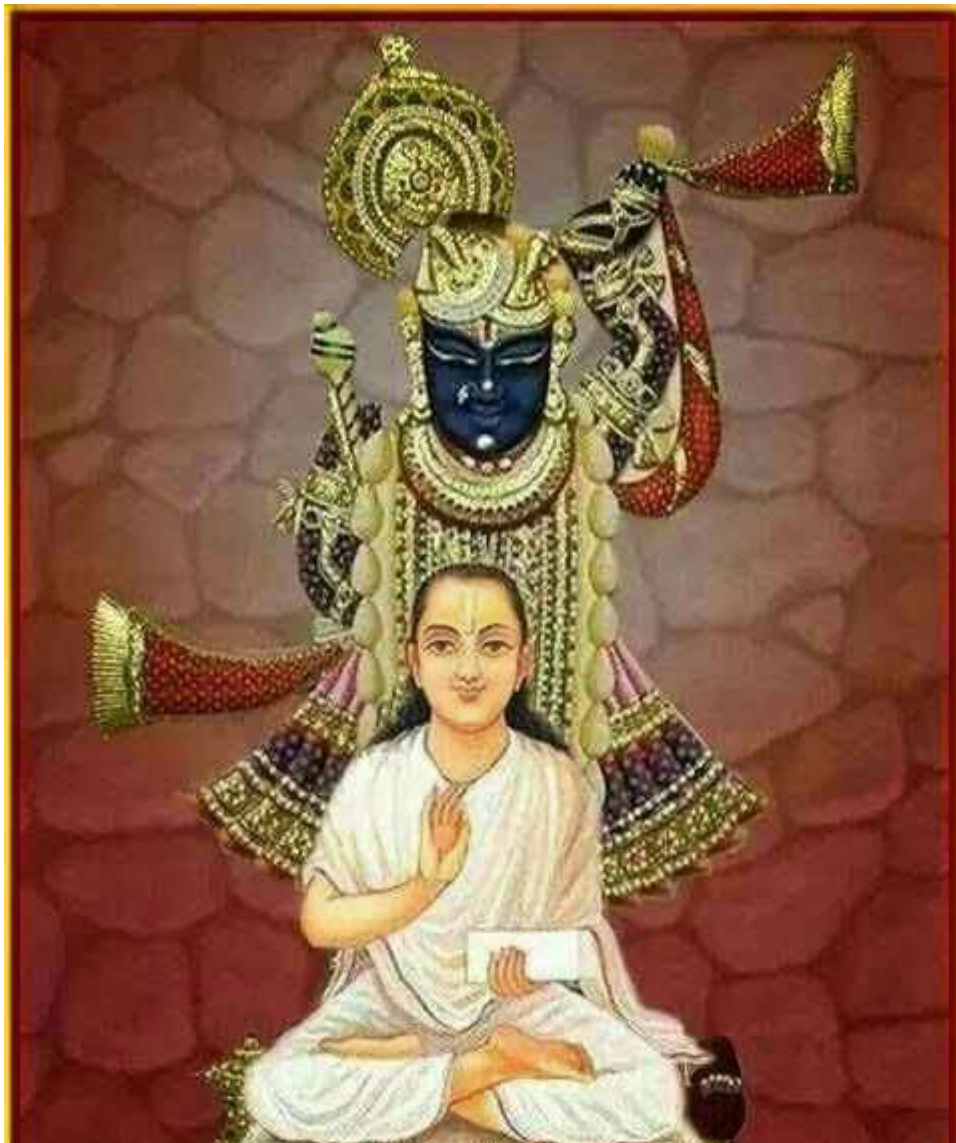
कृष्ण

यशोदा

नंद

यमुना

वल्लभ

गिरिराज

गुंसाईजी

अष्ठसखा

क्या यही ही है पुष्टि चिंतन?

नहीं नहीं

कृष्ण - पुष्टि आत्मा पहचानो

यशोदा - पुष्टि संस्कृति पहचानो

नंद - पुष्टि कृति पहचानो

यमुना - पुष्टि प्रकृति पहचानो

वल्लभ - पुष्टि सिद्धांत पहचानो

गिरिराज - पुष्टि पद्धति पहचानो

गुंसाईजी - पुष्टि विश्वास पहचानो

अष्ठसखा - पुष्टि जीवन पहचानो

" Vibrant Pushti "

चित्रजी में पुष्टि प्रणाली है।

मध्य में **"श्री नाथजी"**

दायें से

प्रथम **"श्री स्वामीनीजी**

साथ में **"श्री यमुनाजी"**

साथ में **"श्री वल्लभाचार्यजी"**

साथ में **"श्री हरिरायजी"**

बायें में

प्रथम **"श्री चंन्द्रावलीजी"**

साथ में **"श्री ललिताजी"**

साथ में **"श्री गुंसाईजी"**

साथ में **"श्री गोकुलनाथजी"**

क्या पुष्टि संस्कृतिता जगाता है यह चित्रजी?

" Vibrant Pushti "

"श्रीवल्लभ" श्रीस्वामीनीजु और श्रीप्रभु का विरहात्मक भाव स्वरुप नहीं है।

"श्रीवल्लभ" तो श्रीस्वामीनीजु और श्रीप्रभु के युगल स्वरुप है।

पुष्टिमार्ग की अनोखी रीत यही है की यह रीत में जीव ही खुद **श्रीवल्लभ** हो सकता है,

श्रीयमुना हो सकता है,

श्रीगिरिराज हो सकता है।

यह अति न्यारी और अति सामर्थ्यशिल पुष्टि रीत है।

" Vibrant Pushti "

" श्री वल्लभ जुग जुग प्रकट हो "

श्रीस्वामीनीजु और श्रीप्रभु में विरहात्मकता है पर वह कैसे और क्यूँ है वह रीत भिन्न है, पर वह विरह श्रीवल्लभ कैसे हो सकते है?

" Vibrant Pushti "

ऐसी विरहता जो जन्म जन्म हो

ऐसी विरहता जो जीवन जीवन हो

ऐसी विरहता जो प्राकट्य प्राकट्य हो

ऐसी विरहता जो अवतार अवतार हो

ऐसी विरहता जो मेरे ब्रह्म ब्रह्म हो

जो परब्रह्म से जुड़ाये

"तृतीयात्मक स्वरुप" समझना अति आवश्यक है।

क्यूँकि हमारे लिए यही स्वरूप ही है। क्यूँ?

तृतीयात्मक स्वरूप क्या है?

" Vibrant Pushti "

तृतीय तृतीय तृतीय

"श्री हरिदासवर्य गिरिराजजी"

यह सर्वोत्तम परम आत्मीय तत्व थे जो सदा परम मूल तत्व परमात्मा के सदा निकट थे।

अब यह प्रश्न होता है की

"श्री हरिदासवर्य गिरिराजजी"

का परिवर्तन गोवर्धन में कैसे हुआ?

" Vibrant Pushti "

" हे गोवर्धन मेरा स्वीकार करना "

"**गोवर्धन पूजा**" को हम क्या समझते है?

"**गोवर्धन दर्शन**" को हम क्या समझते है?

"**गोवर्धन**" से **श्री श्रीनाथजी** प्रकट भये, यह लीला को हम क्या समझते है?

" Vibrant Pushti "

हे गोवर्धन मेरे पुष्टि गौत्र

कण कण कण कण

क्षण क्षण क्षण क्षण

पण पण पण पण

मेरे निकट मेरे साथ मेरे घाट रहना

पुष्टिमार्ग के सर्व प्रथम, सर्वोच्च, सर्वोत्तम दीनता सभर, समर्पित, शरणागत आत्म स्वरूप वैष्णव "श्री हरिरायजी" को हमारा दंडवत प्रणाम।

सत्य है कि न कुल का ख्याल रखा न मनुष्य का ख्याल रखा।

रखा केवल "श्री वल्लभ शरण" "श्री वल्लभ चरणस्पर्श सिद्धांत"

यही मेरे "श्री वल्लभ कुल" यही मेरे संस्कार।

यही मुझे पाना है यही मुझे पहचानना है।

"Vibrant Pushti"

सकारात्मक स्पंदन पुष्टि - पुष्टिमार्ग - १ (प्रथम)

"Vibrant Pushti"

Inspiration of vibration creating by experience of

life, environment, real situation and fundamental elements

"Vibrant Pushti"

53, Subhash Park, Sangam Char Rasta

Harni Road, City: Vadodara - 390006

State: Gujarat, Country: India

Email: vibrantpushti@gmail.com

" जय श्री कृष्ण "